RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 45, अंक : 47-48 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 23 फरवरी एवं 1 मार्च, 2020
विक्रमी सम्वत् 2076, सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–45, अंक : 47-48, 23 फरवरी–1 मार्च 2020 तदनुसार 11-17 फाल्गुण, सम्वत् 2076 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व विशेषांक

आर्य समाज के संस्थापक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं आर्य समाज नवांशहर के तत्वावधान में आयोजित 18 फरवरी 2020 को आर.के.आर्य कालेज नवांशहर में पंडित हरबंस लाल शर्मा द्वितीय वैदिक भाषण प्रतियोगिता के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के पधारने पर उनका स्वागत करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, श्री विनोद भारद्वाज, श्री जिया लाल शर्मा, प्रिंसीपल संजीव डाबर, श्री सत्य प्रकाश उप्पल मोगा, श्री नरेन्द्र सूद मोगा एवं अन्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं आर्य समाज नवांशहर के तत्वावधान में आयोजित 18 फरवरी 2020 को आर.के.आर्य कालेज नवांशहर में पंडित हरबंस लाल शर्मा द्वितीय वैदिक भाषण प्रतियोगिता के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्रीमती गुलशन शर्मा जी पौधारोपण करते हुये। उनके साथ खड़े हैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, श्री विनोद भारद्वाज, श्री जिया लाल शर्मा, प्रिंसीपल संजीव डाबर एवं अन्य।

18 फरवरी 2020 को आर.के.आर्य कालेज नवांशहर में विभिन्न विभागों के स्वाध्याय कक्षों का अनावरण करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्रीमती गुलशन शर्मा जी। उनके साथ खड़े हैं श्री जिया लाल शर्मा एवं श्री विनोद भारद्वाज जी।

नवजागरण के पुरोधा-महर्षि दयानन्द

ले०—श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

महर्षि दयानन्द सरस्वती भारत के आधुनिक तत्त्ववेता, सुधारक तथा श्रेष्ठ पुरूष ही नहीं थे अपितु नवजागरण के महान् पुरोधा थे। महर्षि दयानन्द ने अपने राष्ट्रव्यापी चिन्तन से गुलामी की जंजीरों में जकड़े हुए देश को एक नई दिशा देने का कार्य किया था। वह आधुनिक भारत के कुछ प्रमुख राष्ट्र निर्माताओं में से एक हैं। महर्षि की इस राष्ट्र एवं समाज को असंख्य देन हैं। मानवता और विश्व के कल्याण के लिए उनकी ऐसी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां हैं जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता। उन्नीसवीं शताब्दी में देश के शिक्षित वर्ग में नास्तिकता पनप रही थी और सामान्य जनता अन्धविश्वास और रूढ़ियों से ग्रस्त थी। उन्होंने आचार और धार्मिक पुनरूत्थान के आधार पर नए भारत की नींव सुदृढ़ की। उन्होंने घोषित किया कि वेदों तथा प्राचीन भारतीय चिन्तन में विज्ञान सम्मत और नैतिक धार्मिक सत्य निहित है। उन्होंने वेदों तथा प्राचीन तत्त्वज्ञान की ऐसी बुद्धिपूर्वक व्याख्या की कि कड़े से कड़ा बुद्धिवादी भी उससे सहमत हो गया। इसी के साथ उन्होंने ऐसे शुद्ध ईश्वरवाद की प्रतिष्ठा की जिससे पश्चिमी विचारक और चिंतक भी सहमत थे। प्राचीन धर्मग्रन्थों और तत्त्वज्ञान में से उन्होंने ऐसे मोती प्रस्तुत किए जिन्हें देशवासियों ने पूरे विश्वास और आस्था के साथ ग्रहण किया। परिणामस्वरूप पश्चिमी एवं प्रतिस्पर्द्धी सम्प्रदायवादियों के आक्रमण पस्त हो गए। हताश भारतीय मानस भारतीय तत्त्वज्ञान की ज्योति से एक नई प्रेरणा प्राप्त कर नैतिक एवं वैचारिक दृष्टि से स्वावलम्बी और शक्तिसम्पन्न होने लगा।

महर्षि दयानन्द गुजरात में जन्मे थे। घर से वह सच्चे शिव की खोज में सत्यज्ञान की प्राप्ति के लिए वनों पर्वतों एवं विभिन्न प्रदेशों में घूमते रहे। 1860 से 1863 तक गुरू विरजानन्द के चरणों में बैठने के बाद वह 1964 से 1883 तक निरन्तर बीस वर्षों तक भगवान पर विश्वास कर एकाकी साधक की तरह नवीन आर्यावर्त की प्रतिष्ठा के लिए देश भर में घूमे। आगरा, ग्वालियर, जयपुर, काशी, अजमेर, बम्बई, पूना, कलकत्ता, पटना, जोधपुर आदि स्थानों में ही नहीं अपितु देश के अनेक जनपदों और नगरों में उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश और आर्य सिद्धान्तों की अलख जगाई। संसार के अन्य महापुरूषों की भांति उन्होंने शारीरिक यातनाएं सही। विरोधियों, प्रतिस्पर्द्धियों के विरोधों और अत्याचारों का सामना किया। पूरे विश्वास और साहस के साथ उन्होंने देश में व्याप्त कुरीतियों, अज्ञान, विषमता और अन्याय का सामना किया। इसी समय उन्होंने मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। इसी के साथ उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदों के भाष्य आदि प्रस्तुत कर हिन्दी के माध्यम से जनता से सीधा सम्पर्क स्थापित किया। उन्होंने किसी संस्था, मठ मन्दिर की गद्दी नहीं सम्भाली, न वह अपने नवीन आन्दोलनों के सर्वे सर्वा बने। वह तो अपने आपको समाज का एक सामान्य सदस्य कहते थे। इसके बावजूद केवल अपने व्यक्तिगत प्रयत्नों से उन्होंने देश में एक अभूतपूर्व सामाजिक एवं धार्मिक क्रान्ति कर दी। शंकराचार्य के बाद पदयात्रा के माध्यम से अपूर्व धार्मिक क्रान्ति करने वाले वह दूसरे संत थे।

आर्य समाज के माध्यम से देश और विदेशों में शिक्षा, समाज सुधार, दलितोद्धार, स्त्री शिक्षा, नवीन गुरूकुल शिक्षा प्रणाली, गोरक्षा, हिन्दी प्रचार आदि नानाविध क्षेत्रों में जो कार्य हुआ है उसे प्रत्येक राष्ट्रवादी स्वीकार करता है। इन कार्यों की महत्ता है और इन कार्यों को सम्पन्न कर आर्य समाज की गरिमा बढ़ी है। परन्तु महर्षि की सबसे बड़ी उपलब्धि उनकी मानवता को वह वैचारिक देन थी जो उन्होंने आर्य समाज के नियमों, सामाजिक व्यवस्था और शिक्षा के क्षेत्र में नई दृष्टि देकर प्रस्तुत की है। आर्य समाज के नियम मानवता के लिए पथ प्रदर्शक हैं। ऋषि न स्वयं समाज के सूत्रपात बने, न उन्होंने कोई अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। बल्कि उन्होंने आर्य समाज के नियमों के द्वारा एक नई जीवन दृष्टि दी। ऋषि ने सीख दी– अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए, दूसरे आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना और शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना है। तीसरे सब अपनी उन्नति में सन्तुष्ट न रहें, प्रत्युत सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझें, साथ ही मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें। ऋषि ने अपने जीवनकाल के लिए तथा बाद के लिए इन नियमों को ही समाज और राष्ट्र का पथ प्रदर्शक नियुक्त किया था। दूसरे धर्मों और सम्प्रदायों के पैगम्बर और उनकी पूरी धार्मिक परम्परा और उत्तराधिकारी हैं, परन्तु महर्षि ने मानव मात्र की उन्नति, सबकी एवं संसार भर की उन्नति और अविद्या के नाश के कार्य को ही प्राथमिकता दी थी। यह महर्षि की तीसरी उपलब्धि थी। महर्षि दयानन्द ने गुरू विरजानन्द जी के सानिध्य में सच्ची शिक्षा ग्रहण कर उन्हें राष्ट्र को पथ प्रदर्शन करने के माध्यम से सच्ची गुरूदक्षिणा दी थी।

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी बोध दिवस मनाते हुए हम यह संकल्प लें कि महर्षि दयानन्द ने सच्चे शिव को प्राप्त करके जो मार्ग दिखाया है, हम भी उसी मार्ग का अनुसरण करेंगे। जिस प्रकार महर्षि दयानन्द ने बोध प्राप्त करके संसार का मार्गदर्शन किया है उसी प्रकार हम भी महर्षि दयानन्द के कार्यों से प्रेरणा लेकर हम भी मानवता के लिए कार्य करेंगे। हमारा बोध पर्व मनाना तभी सार्थक होगा जब हम महर्षि दयानन्द के पदचिह्नों पर चलने का प्रयास करेंगे। ऋषि बोध पर्व के अवसर पर हमें महर्षि की उपलब्धियों का स्मरण करते हुए ऋषि के आदेशों को कार्यान्वित करना चाहिए।

महर्षि दयानन्द का जन्मदिवस एवं बोध पर्व

ले०—श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आत्मविस्मृत भारत को स्वराज्य मन्त्र का प्रथम उद्घोष देने वाले युगपुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म गुजरात राज्य के टंकारा ग्राम में फाल्गुन कृष्ण दशमी को श्री कर्षन जी के घर हुआ था। इनका जन्म का नाम मूलशंकर था। मूलशंकर के रूप में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को सच्चे शिव का बोध हुआ। इसके बाद मूलशंकर नैष्ठिक दीक्षा लेकर शुद्ध चैतन्य बने फिर स्वामी पूर्णानन्द जी से सन्यास की दीक्षा ली। स्वामी पूर्णानन्द जी ने शुद्ध चैतन्य से उनका नाम दयानन्द सरस्वती घोषित किया। स्वामी जी योगाभ्यास की अभिलाषा में अनेक योगियों से मिले। ज्वालानन्द पुरी और शिवानन्द गिरि इन दोनों योगियों से भली-भांति ग्रहण और संवत् १९१७ में स्वामी विरजानन्द जी के चरणों में जा पहुंचे। स्वामी विरजानन्द जी ने स्वामी दयानन्द जी को उत्तम पात्र जानकर प्राणपन से विद्या दान की। विद्याध्ययन के पश्चात स्वामी दयानन्द जी कुन्दन बन गए। गुरूकुल से विद्या पूर्ण करके गुरू दक्षिणा के समय गुरू विरजानन्द जी ने कहा कि दयानन्द समाज में अनेक मत-मतान्तरों से समाज में कुरीतियां उत्पन्न हो गई हैं। वैदिक ग्रन्थों का पठन-पाठन समाप्त हो गया है उसे प्रारम्भ करके समाज को सत्य की ओर प्रेरित करो, सामाजिक कुरीतियों, पाखण्डों, अन्धविश्वासों, को दूर करो और लोगों को सन्मार्ग दिखाओं यही मेरी गुरूदक्षिणा है।

स्वामी दयानन्द अपने गुरू के वचनों को स्वीकार करके समाज के उद्धार के लिए प्रवृत्त हो गए। 19वीं शताब्दी में सम्पूर्ण समाज अविद्या रूप गहन अन्धकार से घिरा हुआ था। ऐसे समाज को कपिल, कणाद, गौतम जैसा पाण्डित्य का धनी, भीष्म सा ब्रह्मचारी, शंकराचार्य सा योगी, राम जैसा मर्यादा पुरूषोत्तम, कृष्ण समान नीतिवान, महात्मा बुद्ध सा वैरागी, व्यास एवं पतंजलि जैसा आध्यात्मिक बहुगुणसम्पन्न दयानन्द प्राप्त हो गया। स्वामी दयानन्द जी ने समाज सुधार के लिए अनेक कार्य किए। समाज में प्रचलित मनुष्यकृत दूषित जाति व्यवस्था के स्थान पर कर्म के आधार पर विशुद्ध वर्णव्यवस्था का उपदेश करके मानव जाति का महान उपकार किया। विद्यारूप सूर्य के अस्त होने से समाज नारी जाति को विद्याध्ययन के अधिकार से वञ्चित कर रहा था ऐसे समय में महर्षि ने विद्या का द्वार खोलते हुए नारी के प्रति उत्पन्न होने वाली दुष्ट मान्यताओ का खण्डन करके स्त्रियों का पठन-पाठन अनिवार्य घोषित किया। शिक्षा के क्षेत्र में इस नवयुग प्रवर्त्तक ने दूषित शिक्षा पद्धति को चुनौती देकर आर्य शिक्षा पद्धति को उपस्थित किया। मानव मात्र के लिए शिक्षा अनिवार्य की और सहशिक्षा का विरोध करके बालक व बालिकाओं के लिए अलग- अलग पठन-पाठन की व्यवस्था दी।

वैदिक संस्कृति के इस रक्षक ने आत्मिक उन्नति हेतु यज्ञ, पर्व, संस्कार आदि का लाभ सामने रखते हुए यथार्थ संस्कृति उपस्थित की। जब ईश्वर एक है, धर्म एक है तो संस्कृति अनेक कैसे? स्थान-स्थान की सभ्यताओं में अन्तर हो सकता है परन्तु आत्मिक उन्नति के साधनों में नहीं। आत्मिक उन्नति के साधन ही संस्कृति है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि सभी व्यक्तियों के लिए उन्नति के साधन हैं। संसार के प्रत्येक व्यक्ति के लिए वैदिक संस्कृति से लाभ प्राप्त करने हेतु संस्कारविधि नामक महान् ग्रन्थ की रचना की। वैदिक आश्रम व्यवस्था का प्रचार करके मानव जीवन का कार्यक्रम उपस्थित किया।

राष्ट्रीयता के तीन आधार हैं इडा, सरस्वती, मही अर्थात् समान भाषा, समान संस्कृति तथा समान मातृभूमि। इसी आधार पर ऋषिवर ने संस्कृत को विशेष महत्व प्रदान किया। राष्ट्र का आधार उसकी संस्कृति है। जब तक तथाकथित संस्कृतियों के स्थान पर संसार के प्रारम्भ से ही सर्वत्र फैली हुई वैदिक संस्कृति को राष्ट्र ग्रहण नहीं करता तब तक राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। ऐसा विचार करके ऋषिवर ने संस्कृति के प्रचार प्रसार में अपना सर्वस्व लगा दिया। राष्ट्र का आधार उसकी मातृभूमि है। जिस भूमि पर हम उत्पन्न हुए जहां का अन्न व वायु हमारे शरीर का पोषक है उस मातृभूमि के प्रति समर्पित हो जाना हमारा कर्त्तव्य है यह ज्ञान कराया।

इन सब कार्यों की आधारशिला शिवरात्रि का वह उपवास था जिससे उनके जीवन को एक नई प्रेरणा मिली थी। इसी दिन महर्षि दयानन्द की प्रसुप्त सोई हुई चेतना ने अंगडाई ली थी। 14 वर्ष के बालक मूलशंकर ने अपने पिता द्वारा बताई गई शिव की महिमा को सुनकर शिवरात्रि के व्रत को रखने का संकल्प लिया था। बालक मूलशंकर के मन में उनके पिता के द्वारा बताई हुई शिव की छवि अंकित थी। इस कारण वे शिव को महाशक्तिशाली, दैत्यों का संहार करने वाला समझते थे। माता के रोकने पर भी बालक मूलशंकर ने दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली कि आज मैं व्रत रखूंगा और रात्रि को जागरण करके असुरों का संहार करने वाले शिव के साक्षात् दर्शन करूंगा। बालक मूलशंकर के अन्दर दर्शन करने की अभिलाषा बलवती हो गई और वे उपवास के सभी कष्ट सहने के लिए तैयार हो गए। सारा दिन उपवास रखकर रात्रि को अपने पिता के साथ जागरण के लिए शिव मन्दिर में गए। उसी शिवमन्दिर में महर्षि दयानन्द जी को आत्मबोध हुआ जो उनके द्वारा किए गए कार्यों का मूल बना।

महर्षि दयानन्द का जन्मदिवस एवं बोधोत्सव मनाते हुए हम ऋषि दयानन्द की विचारधारा एवं आर्य समाज के मन्तव्यों को जनता के समक्ष रखें। ऋषि दयानन्द की सार्वभौमिक विचारधारा से ही समाज का कल्याण किया जा सकता है।

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु

ले०–श्री सुधीर शर्मा कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

भारतवर्ष के इतिहास में सदियों से आस्तिक हिन्दु जनता प्रतिवर्ष शिवपुराण की मान्यता के अनुसार भगवान शिव की विशेष आराधना के लिए महाशिवरात्रि के पवित्र व्रतोपवास का अनुष्ठान करती चली आ रही है। ऐसी ही एक महा शिवरात्रि सम्वत् 1894 की आई थी जिसने 14 वर्ष के बालक मूलशंकर के चित्त को आश्चर्यचकित कर दिया। शिवदर्शन की प्रबल लालसा के वशीभूत दयानन्द शिव मन्दिर में सभी के सो जाने के उपरान्त भी जागरण कर रहे थे। रात्रि के तीसरे पहर में उन्होंने देखा कि शिवपिण्डी पर अपवित्र क्षुद्र चूहे उछल कूद करके चढ़ रहे थे और उस पर चढ़ाए हुए प्रसाद को बड़े आनन्द के साथ खा रहे थे। जैसे मेघमाला में रहकर विद्युत की रेखा फिर जाती है और जैसे वायु से ताड़ित महासागर में ऊंची-ऊंची तरंगे उठती हैं वैसे ही दयानन्द के निर्मल चित्त में इस घटना से संचालित विचार और प्रश्नों के तारे एक-एक करके चमचमा उठे। शंका से व्याकुल हृदय में उन्होंने सोचा कि शिव कथा में तो मैंने सुना है कि शिव त्रिशूलधारी है, उसका वाहन वृषभ और निवास कैलाश है, वह सबका संहार करने वाला है। तो क्या वही महादेव यह मूर्ति हो सकता है? इसके सिर पर तो अपावन प्राणी चूहे दौड़ लगा रहे हैं। इसमें तो इन तुच्छ जीवों को भगाने का भी सामर्थ्य नहीं है। यह पत्थर की मूर्ति महादेव नहीं हो सकती? तो फिर महादेव कैसा और कहां है? जैसे वायु तीव्र वेग नौका के मुख को फेर देता है, विशाल चट्टान से टक्कर खाकर नदी का बहार बदल जाता है, वैसे ही इस घटना से दयानन्द की चित्तवृत्तियां अपने प्रवाह को बदलने लगी।

दयानन्द से पहले और बाद में न जाने कितने लोगों ने चूहों आदि का ताण्ड्व कितनी बार शिवलिंङ्गादि मूर्तियों पर देखा होगा। लेकिन उनके विश्वास और व्यवहार में एकता नहीं थी। इसलिए उनके जीवनों पर घटना को कोई विशेष प्रभाव नहीं था। संसार में कोई धर्म तत्व तब तक स्थिर नहीं रह सकता जब तक कि वह मनुष्य में इच्छा और कर्त्तव्य, विश्वास और व्यवहार अथवा विचार और आचार को एक ही नियत रेखा पर खड़ा नहीं कर देता। इच्छा और कर्त्तव्य, विश्वास और व्यवहार की एकरूपता ने बालक मूलशंकर को महर्षि दयानन्द सरस्वती के रूप में परिवर्तित कर दिया। तीव्र वैराग्य और कठोर अभ्यास के बल पर वे भारत माता के क्षितिज पर सूर्य के समान प्रकाशित हुए। वेद विद्या से युक्त दयानन्द की अलौकिक ज्ञान प्रतिभा ने रूढ़िवाद, गुरूडम और पाखण्डों के मायाजाल को तर्क के प्रबल बाणों से भेदकर सदियों से चले आ रहे अज्ञानमय , धर्म विरोधी रीति रिवाजों का पर्दाफाश कर सत्य के सूर्य से मानव जाति को प्रकाशित किया।

महर्षि दयानन्द प्राणीमात्र के हितैषी और मानव मात्र के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने वैदिक धर्म को स्वीकार कर, वेदों के विषय में चले आ रहे अनर्गल मिथ्या विचारों का खंडन कर, स्वयं वेदों काभाष्य किया जिसने संसार के विद्वानों की आंखें खोल दी। वैसे तो कई महापुरूष समय-समय पर दुनिया में आए जो किसी न किसी विषय को लेकर मानव उन्नति के प्रेरणा स्रोत रहे, परन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने मानव जाति ही नहीं समस्त प्राणी जगत की सर्वांगीण उन्नति का मार्ग दर्शन बड़ी निर्भीकता के साथ किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने गुलामी की जंजीर में जकड़े भारतवासियों को स्वतन्त्रता के लिए तैयार किया, नारी जाति की दयनीय दशा देखकर सर्वप्रथम पुनः शिक्षा का अधिकार दिलाया। जाति-पाति की रूढ़िवादी परम्परा को नष्ट कर गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर वर्णाश्रम धर्म का पालन करने पर बल दिया। गुरूकुल शिक्षा प्रणाली का प्रचार व प्रसार, राष्ट्र की एकता के लिए संस्कृत और हिन्दी का पूर्ण विकास, धर्म के मूल तत्व आत्मा के विकास के लिए अहिंसा परमो धर्म का पालन करने का संदेश दिया। साम्प्रदायिकता के विकराल रूप को नष्ट करने के लिए रूढ़िवाद और अन्धविश्वास के आधार पर पनपने वाले तर्कहीन सिद्धान्तों को समाप्त कर विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरने वाले धर्म के सत्य स्वरूप को प्रदर्शित किया।

शिवरात्रि का पर्व हमें यही संदेश देता है कि हमारा मन भी शुभ संकल्पों वाला हो। शुभ संकल्पों से युक्त मन में भी अच्छे विचारों का उदय होता है। अच्छे विचार ही हमारी आत्मिक उन्नति का कारण बनते है। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने रात्रि शयन से पूर्व शिवसंकल्प सूक्त के छः मन्त्रों का पाठ अनिवार्य बताया है। शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति का आधार सुसंकल्पित मन है। महर्षि दयानन्द का बोध भी संकल्प पर आधारित था। उसी संकल्प के साथ महर्षि दयानन्द ने सम्पूर्ण राष्ट्र एवं समाज के लिए कार्य किया। अगर महर्षि दयानन्द सच्चे शिव की खोज का संकल्प न लेते तो आर्य समाज की स्थापना नहीं होती और न ही समाज से पाखण्ड, अन्धविश्वास और कुरीतियों का अन्त होता। इसलिए हमें तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु का भाव रखकर कार्य करना चाहिए।

समाज सुधारक–महर्षि दयानन्द

ले०–श्री अशोक परूथी एडवोकेट रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद् पंजाब

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को एक समाज सुधारक के रूप में जाना जाता है। महर्षि दयानन्द के आगमन से पूर्व हमारा समाज अनेक प्रकार की कुरीतियों से ग्रसित हो चुका था। इन कुरीतियों एवं बुराईयों के कारण समाज में छूआछूत, वर्ण व्यवस्था का विकृत रूप, धार्मिक जगत में पाखण्ड, अन्धविश्वास और मूर्तिपूजा के कारण समाज का शोषण हो रहा था। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज को सही दिशा प्रदान करने के लिए लगा दिया। उनका मानना था कि वर्ण व्यवस्था के शुद्ध रूप से प्रचलित होने, नारी को शिक्षा का अधिकार मिलने से ही समाज का उद्धार हो सकता है। इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने नारी शिक्षा के ऊपर विशेष बल दिया। इन समाज सुधार के कार्यों के कारण महर्षि दयानन्द को समाज सुधारक की संज्ञा दी गई परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती भारत के आधुनिक तत्त्ववेता, सुधारक तथा श्रेष्ठ पुरूष ही नहीं थे अपितु वह आधुनिक भारत के कुछ प्रमुख राष्ट्र निर्माताओं में से एक हैं। महर्षि की असंख्य देन हैं मानवता और विश्व को परन्तु उनकी तीन ऐसी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां हैं जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता। उन्नीसवीं शताब्दी में देश के शिक्षित वर्ग में नास्तिकता पनप रही थी और सामान्य जनता अन्धविश्वास और रूढ़ियों से ग्रस्त थी। उन्होंने आचार और धार्मिक पुनरूत्थान के आधार पर नए भारत की नींव सुदृढ़ की। उन्होंने घोषित किया कि वेदों तथा प्राचीन भारतीय चिन्तन में विज्ञान सम्मत और नैतिक धार्मिक सत्य निहित है। उन्होंने वेदों तथा प्राचीन तत्त्वज्ञान को तत्कालीन बुद्धिजीवियों के समक्ष इस प्रकार प्रस्तुत किया कि सम्पूर्ण बुद्धिजीवि वर्ग भी उससे सहमत हो गया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ईश्वर के स्वरूप को इस प्रकार प्रस्तुत किया कि समाज के बुद्धिजीवि वर्ग उनकी बातों से सहमत हो गया। परन्तु समाज के ठेकेदार तथाकथित पण्ड़ितों ने तथा मठाधीशों ने उनकी बात का विरोध किया क्योंकि उनकी स्थापित की हुई परम्पराएं हिल गई थी। प्राचीन धर्मग्रन्थों और तत्त्वज्ञान में से उन्होंने ऐसे मोती प्रस्तुत किए जिन्हें देशवासियों ने पूरे विश्वास और आस्था के साथ ग्रहण किया। परिणामस्वरूप पश्चिमी एवं प्रतिस्पर्द्धी सम्प्रदायवादियों के आक्रमण पस्त हो गए। हताश भारतीय मानस भारतीय तत्त्वज्ञान की ज्योति से एक नई प्रेरणा प्राप्त कर नैतिक एवं वैचारिक दृष्टि से स्वावलम्बी और शक्तिसम्पन्न होने लगा। ऋषि की यह वैचारिक देन उनकी पहली उपलब्धि थी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी प्राचीन मान्यताओं एवं वैदिक सिद्धान्तों को समाज में स्थापित करने के लिए अनके प्रकार के कष्ट सहे, संसार के अन्य महापुरूषों की भांति उन्होंने शारीरिक यातनाएं सही। विरोधियों, प्रतिस्पद्धियों के विरोधों और अत्याचारों का सामना किया। पूरे विश्वास और साहस के साथ उन्होंने देश में व्याप्त कुरीतियों, अज्ञान, विषमता और अन्याय का सामना किया। इसी काल में उन्होंने मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। इसी के साथ उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदों के भाष्य आदि प्रस्तुत कर हिन्दी के माध्यम से जनता से सीधा सम्पर्क स्थापित किया। उन्होंने किसी संस्था, मठ मन्दिर की गद्दी नहीं सम्भाली, न वह अपने नवीन आन्दोलनों के सर्वे सर्वा बने। वह तो अपने आपको समाज का एक सामान्य सदस्य कहते थे। इसके बावजूद केवल अपने व्यक्तिगत प्रयत्नों से उन्होंने देश में एक अभूतपूर्व सामाजिक एवं धार्मिक क्रान्ति कर दी। शंकराचार्य के बाद पदयात्रा के माध्यम से अपूर्व धार्मिक क्रान्ति करने वाले वह दूसरे संत थे। महर्षि की यह धार्मिक क्रान्ति उनकी दूसरी बड़ी उपलब्धि थी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने एक कुशल चिकित्सक की तरह समाज में प्रचलित कुरीतियों का ईलाज किया। इन कार्यों को सम्पन्न कर आर्य समाज की गरिमा बढ़ी है। परन्तु महर्षि की सबसे बड़ी उपलब्धि उनकी मानवता को वह वैचारिक देन थी जो उन्होंने आर्य समाज के नियमों, सामाजिक व्यवस्था और शिक्षा के क्षेत्र में नई दृष्टि देकर प्रस्तुत की है। आर्य समाज के नियम मानवता के लिए पथ प्रदर्शक हैं। ऋषि न स्वयं समाज के सूत्रपात बने, न उन्होंने कोई अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। बल्कि उन्होंने आर्य समाज के नियमों के द्वारा एक नई जीवन दृष्टि दी। ऋषि ने सीख दी–अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए, दूसरे आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना और शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना है। तीसरे सब अपनी उन्नति में सन्तुष्ट न रहें, प्रत्युत सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझें, साथ ही मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें। ऋषि ने अपने जीवनकाल के लिए तथा बाद के लिए इन नियमों को ही समाज और राष्ट्र का पथ प्रदर्शक नियुक्त किया था।

बोधपर्व हम सब आर्य जनों के लिए मार्गदर्शक का कार्य करता है। किस प्रकार हम निराशा के भंवर से निकलकर समाज को नई दिशा प्रदान कर सकते हैं, यह शिक्षा हमें उस साधारण सी दिखने वाली घटना से मालूम होती है। महाजनो येन गताः सः पन्थाः की उक्ति के अनुसार हम भी महर्षि दयानन्द के पदचिह्नों पर चलते हुए समाज एवं राष्ट्र के लिए हितकारी कार्य करें।

ऋषि दयानन्द का ऋण

ले०—श्री पं. सत्यदेव जी, विद्यालंकार एम. ए.

भारत एक भावना प्रधान देश है। यहां भक्तों की कोई कमी नहीं। किसी भी व्यक्ति में कोई विशेषता हो, उसके चरणों में नमस्कार करने वालों की कमी न रहेगी। बाहरी रूप रंग की भी कोई शर्त नहीं। लम्बी सफेद दाढ़ी, सिर पर सफेद पगड़ी, लाल-लाल मुख और लम्बा कद, बस महात्मा या ऋषि तो बना बनाया है। पढ़ा लिखा होना जरूरी नहीं, हां बातें करने में चतुर होना चाहिए। लच्छेदार बातें; बीच-बीच में गम्भीर भाव से ओ३म्-ओ३म् या वाहे गुरु-वाहे गुरु, बस चेले चेलियों की कोई कमी नहीं।

यह भी जरूरी नहीं कि दाढ़ी ही हो, घुटा हुआ सिर मुंह, गहरे गेरुए कपड़े, पैरों में खड़ाऊं चेहरे पर मुस्कराहट बस दिव्य रूप बना बनाया तैयार है।

ऐसे देश में जहां नया पन्थ चलाना कठिन नहीं, गुरु बनना कठिन नहीं, अवतार और साक्षात रूप धारी भगवान् बनना भी कठिन नहीं, आदित्य ब्रह्मचारी, अद्वितीय संस्कृत के विद्वान तथा कुन्दन की सी देह वाले ऋषि दयानन्द ने अपना पन्थ न बना कर ऋषि मुनियों का पन्थ चलाया, अपने पैर न पुजवा कर प्राचीन ऋषियों के चरणों में लोगों को झुकाया, अपने नये ग्रन्थ की रचना न कर वेद का पुनरुद्धार किया, यह ऋषि का हम पर ही नहीं सम्पूर्ण वेद शास्त्र के अनुयायियों पर पहला ऋण है।

ऋषि दयानन्द का सबसे अधिक महत्त्व इस बात में है कि उसने अपने को मिटा कर वेद मार्ग चलाया। दयानन्द के नाम से कोई नया धर्म नहीं चलाया। इस अभागे मत मतान्तरों में बंटे कटे देश को पुराना, सीधा और सच्चा मार्ग बतलाया। इसीलिए पन्थों का अनुयायी आर्य समाज भी दयानन्द होता तो तेरी भी चुप और मेरी भी चुप, किसी और पन्थ से कोई झगड़ा ही न होता। इससे दयानन्द का नाम तो चमक जाता पर वेद शास्त्र का नाम लुप्त हो जाता।

भारत में जितने भी मत या पन्थ वैदिक धर्म का परिहार या तिरस्कार कर बने हैं, उन्होंने अपने नए ग्रंथों को प्रमाण माना। नए तीर्थों की रचना की, नये विवाह आदि के संस्कार बनाए, नये ढंग से मूर्ति-पूजा प्रारम्भ की। केवल पुराने ढंग का बहिष्कार और खण्डन किया। पुरानी सब बातों को नए बाने में लोगों के सामने उपस्थित कर अपना महत्त्व स्थापित कर लिया। सत्य के पुजारी तथा ऋषियों के अनन्य भक्त दयानन्द को यह सब स्वीकार न था। उसे हिन्दू जाति के टुकड़े न कर उसे जोड़ना था, एक बनाना था। किसी नए पन्थ या मत के चलाने से यह एकता नहीं आ सकती थी। इसका केवल एक मार्ग था, पुरानी परम्परा का पुनरुज्जीवन। यही दयानन्द ने किया। उसने एक भाषा, एक धर्म, एक शास्त्र, एक भगवान् और एक सभ्यता का नारा लगाया। केवल भारत के लिए ही नहीं, सम्पूर्ण संसार के लिए एकता का नारा लगाया। उस दिव्य दृष्टि वाले ऋषि का सम्पूर्ण देश और सम्पूर्ण देश ही नहीं, सम्पूर्ण संसार पर यह एक ऋण है। ऋषि के सामने एक दिव्य आदर्श था। आज जब देश भाषा, धर्म और प्रान्तीयता की बीमारियों से दु:खी है, यह एक नई बात सी प्रतीत होती है। आज भारतवासी कोई नहीं। भारतीय होने के नाते किसी का कोई अधिकार नहीं। कोई बंगाली है, कोई मराठा, कोई आदिवासी है तो कोई द्रविड़, कोई ईसाई है तो कोई सिख और उन दृष्टिकोणों से प्रत्येक अधिकार मांगता है, नौकरियां मांगता है, मन्त्री पद मांगता है तथा अन्य जीवन की सुविधाएं मांगता है। भारतीय होना मानो कुछ है ही नहीं। गांधी और दयानन्द का भारत मानो-स्वतन्त्र होते ही टुकड़े-टुकड़े हो गया है।

मनुष्य मात्र पर और विशेषत: भारतीयों पर ऋषि दयानन्द का एक और ऋण भी है। ऋषि दयानन्द ने भारतीय जीवन के मूल-मन्त्र संयम को पकड़ा है। गांधी, अरविन्द, रामकृष्ण परमहंस आदि सब आधुनिक युग की महान् आत्माओं ने इसके महत्त्व को स्वीकार किया है। जैसे तुलसीदास के हृदय में 'राम' का नाम लेते ही आनन्द की हिलोर उठती थी, दयानन्द के हृदय में 'वेद और ब्रह्मचर्य' इनके नाम से आनन्द भर जाता था।

गुरुकुल कांगड़ी में पढ़ते हुए आचार्यवर स्वामी श्रद्धानन्द के मुख से सुने ब्रह्मचर्य के उपदेश जीवन पर्यन्त भुलाए नहीं जा सकते। विलास के हर रूप में मस्त मुन्शीराम को महात्मा मुन्शीराम और स्वामी श्रद्धानन्द का रूप परम ब्रह्मचारी के दर्शन मात्र ने दे दिया। उन दर्शनों की गाथा कहते हुए स्वामी श्रद्धानन्द कभी अघाते न थे। स्वामी श्रद्धानन्द का सबसे प्यारा शब्द 'ब्रह्मचर्य' था।

आज ब्रह्मचर्य नाम से युवकों के चेहरों पर अविश्वास भरी मुस्कराहट छा जाती है। हमारा समाज, हमारे मनोरंजन, हमारे खेल सब असंयम की ओर ले जा रहे हैं। शायद सबसे अधिक बिकने वाली वे पुस्तकें हैं। जिनमें अधिक से अधिक भोग विलास का वर्णन हो। संसार के कीट पतंग से लेकर हाथी तक प्रत्येक प्राणी विषय भोग करता है पर किसी को विषय भोग करना

सिखाया नहीं जाता। भागवतकार ने तो लिखा है, "**लोको व्यवासामिषमद्य सेवा नित्यास्ति जन्तोः**" अर्थात् व्यभिचार, मांस भक्षण तथा मद्य सेवन ये तो अत्यन्त प्रचलित हैं। इसके लिए किसी को कहने की आवश्यकता नहीं। पर मनुष्य जो कि पशु पक्षियों से कहीं अधिक विषयी प्राणी है उसे विषय-भोग का मार्ग सिखाने के लिए हमारे दिग्गज विद्वान बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखते हैं और लिख रहे हैं।

ऐसे युग में ऋषि दयानन्द और उनके शिष्य, स्वामी श्रद्धानन्द, म. हंसराज तथा पं. गुरुदत्त आदि ने जीवन में ब्रह्मचर्य, संयम तथा तप के महत्त्व की ओर सतत प्रेरणा की। मनुष्य की मनुष्यता अपने को वश करने में है, शरीर के भागों के पीछे भागने में नहीं। इस वैदिक मूल भाव को ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन में ढाला और समाज के सामने कर्म और वाणी से प्रगट किया।

ऋषि दयानन्द की एक और देन की ओर ध्यान दिए बिना यह लेख समाप्त करना कठिन है। उनके सामने लगातार एक पूर्ण रूप है, अधूरा नहीं। दयानन्द ने वेदों के और प्राचीन भारतीय विचारधारा के आधार पर जिस जीवन की व्यवस्था उपस्थित की वह दृष्टि से पूर्ण है। इस जीवन में योग भी है भोग भी, संन्यासी भी है गृहस्थ भी, ज्ञान भी है कर्म भी।

तुलना कोई बहुत अच्छी चीज़ नहीं समझी जाती, क्योंकि इससे कुछ लोग नाराज हो जाते हैं। पर कभी-कभी तुलना करनी ही पड़ती है। जरा अपने चारों ओर नज़र दौड़ाइए। बौद्ध धर्म में जहां भिक्षु बनना जीवन का उच्चतम लक्ष्य है गृहस्थ धर्म क्या हीन धर्म नहीं? जैन धर्म में यति का पद कितना उच्च है, क्या गृहस्थ को वह मान प्राप्त है? सिक्ख धर्म के अनुसार संन्यासी का स्थान कहां है? मध्य काल में प्रचलित भक्ति सम्बन्धी मतों में कर्मकाण्ड का स्थान कहां है? कबीर का यज्ञ यागादि से क्या सम्बन्ध है? इन सब विचारधाराओं में यदि लोक और परलोक का, ज्ञान और कर्म का, वेद और स्मृति का तथा व्यवहार का सामञ्जस्य स्थापित करना चाहा तो वह तुलसीदास ने। उन्होंने जीवन के सभी पक्षों को अपने सामने रखा पर तुलसीदास की पहुंच मुख्यतया वैदिक उपनिषद कालीन साहित्य से बहुत बाद के काल के पौराणिक साहित्य तक है, इससे आगे नहीं।

यह महत्त्व ऋषि दयानन्द को प्राप्त है जिसने शताब्दियों के अन्धकारमय युग से और परम्पराओं से ऊपर उठ कर समस्त हिन्दू विचार के मूल स्त्रोत वेद को पकड़ा। इसमें सन्देह नहीं कि शंकर स्वामी ने वैदिक धर्म के पुनरुद्धार का भगीरथ प्रयत्न किया पर उनकी सम्पूर्ण विचारधारा का आधार उपनिषद् ग्रन्थ हैं, गीता है तथा उत्तर मीमांसा या ब्रह्मसूत्र हैं। सायण प्रसिद्ध विद्वान् थे, उन्होंने चारों वेदों का भाष्य किया पर सायण भाष्य के आधार पर योरुप के विद्वानों ने जो वेद के अर्थ संसार के समक्ष उपस्थित किए क्या उनसे आर्य जाति का मस्तक ऊंचा उठ सकता है? अब तो बड़े-बड़े सनातती विद्वान् भी वेदों की बौद्धिक व्याख्याएं उपस्थित करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

वेदों का साधारण पाठक भी अनुभव करता है कि उनमें संसार को मिथ्या या हीन कहीं नहीं बतलाया गया। संसार के सुखों को हेय या तुच्छ कहीं नहीं दिखाया गया। वेदों में ऐश्वर्य की कामना है, सुखों की इच्छा हैं, सुन्दर अश्व, गौ और रथों की अभिलाषा है। वेदों में विजयी इन्द्र की दुन्दुभि गूंज रही है, आगे बढ़ते वीरों की हुंकार सुनाई दे रही है और विश्व विजय के संदेश उमंगों को बढ़ा रहे हैं। वेद में भगवान् का भी स्थान है, मोक्ष की भी जगह है और तपस्या का भी महत्त्व है। पर मोक्ष और भगवान् ने सारे जीवन को, सुख और ऐश्वर्य को घृणित हेय और त्याज्य बना दिया हो, ऐसा कहीं भी नहीं।

ऋषि दयानन्द के सामने आर्य जीवन का यह अमूल्य सामञ्जस्य पूर्ण चित्र सदा रहा। ऋषि ने वेदों में जो जीवनी शक्ति का संदेश पाया, संसार और समाज को सुन्दर बनाने का जो नुस्खा प्राप्त किया, वह अपनी शक्ति और तेज से भरी वाणी से आर्य जाति के, ठीक कहें तो संसार के सामने रख दिया। ऋषि दयानन्द की इस प्रेरणा ने समस्त हिन्दू जीवन को नये रूप में, बलवान् रूप में और सुन्दर रूप में जग के सामने उपस्थित किया। अब वेद विरोधी भारतीय और अभारतीय किसी विचारधारा का यह हौंसला नहीं कि वह बिना किसी रुकावट के अपना प्रचार कर सके। ऋषि दयानन्द का उत्तराधिकारी आर्य समाज वैदिक विचारधारा का सजग प्रहरी है और सदा रहेगा।

वैदिक विचारधारा का पुनरुज्जीवन ही इस देश पर दयानन्द का सबसे बड़ा ऋण है। इस विचारधारा में जीवन का कोई भी पक्ष हेय नहीं, अधम नहीं, नीच नहीं। ब्रह्मचारी हो या गृहस्थ हो, योगी हो या समाज का सेवक हो, जो भी अपने स्थान पर अपने कर्त्तव्य का ठीक-ठीक पालन कर रहा है एक सा महत्त्वपूर्ण है और समाज का आवश्यक और कल्याणकारी अंग है।

ऋषि दयानन्द के इस विशाल दृष्टिकोण में ब्राह्मण ग्रन्थों का या पूर्व मीमांसा का कर्मकाण्ड, उपनिषदों का ज्ञान तत्त्व, छः दर्शन ग्रन्थों का संसार तत्त्व निरूपण, गीता का निष्काम कर्म तथा भक्तों की भक्ति सबका स्थान है पर उचित रूप से, एक दूसरे का खण्डन करके या निराकरण करके नहीं, एक दूसरे के साथ मिल कर। यही दयानन्द का सामञ्जस्यवादी जीवन दर्शन है, और इसी को हम उस महान ऋषि का इस महान् जाति पर महान् ऋण कहेंगे।

ऋषि बोधोत्सव के पर्व पर ऋषि के इस ऋण का स्मरण करना आर्य जाति के प्रत्येक सुपुत्र का पावन धर्म है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन के प्रमुख प्रेरणादायक प्रसंग

लेo–पंo उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक गढ़ निवास मोहकमपुर देहादून उत्तराखण्ड

धन्य है तुमको ए ऋषि तूने हमे जगा दिया।
सो सो के लुट रहे थे हम तूने हमे बचा लिया।
तुझमें कुछ ऐसी बात थी कि तेरी बात पर ऋषि।
लाखों शहीद हो गये लाखों ने सर कटा दिया।।

अन्तिम सन्देश

ये वक्त है आखरी मेरा अब तो मैं यहां से जाता हूँ।
वेदो की शमां जलती रहे तुमसे आर्यो यह चलाता हूँ।।
इस घर के पहरेदार हो तुम अब आपकी जिम्मेदारी है।
अब तो हम यहां से जाते हैं हुई डयूटी खत्म हमारी है।
वेदो की शमां जलती रहे आर्यों तुमसे यह चाहता हूँ।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की अदभुत धारणा शक्ति

महर्षि दयानन्द जी की धारणा शक्ति अपूर्व थी, उन्होंने एक बार पं. भगवान वल्लभ से सुश्रुत सहिंता जो हजारों पृष्ठ का ग्रन्थ था, मंगवाकर देखा, और एक दो दिन में ही उस पर इतना अधिकार कर लिया कि प्रश्न उठने पर प्रत्येक, प्रसंग का वाक्य उद्धत करने लगे।

महर्षि को वेद कंठस्थ थे

गुजरात में महाराज वेद भाष्य के कार्य में व्यस्त रहते थे, वह पंडितो को वेद भाष्य लिखाया करते थे। उनके हाथ में कोई पुस्तक नहीं रहती थी। फिर वह इतनी शीघ्रता से वेद भाष्य लिखाते थे कि लेखकों को लिखने का अवकाश नहीं मिलता था। उन्हें वेद कण्ठस्थ थे।

महर्षि से उपासना में मन लगाने की विधि पूछी

पं. आदित्य नारायण ने महर्षि से उपासना में मन लगाने की विधि पूछी। स्वामी जी ने उससे कहा यम नियम का पालन करो। उन्होंने द्वतीय, तृतीय बार यही प्रश्न पूछा, स्वामी जी ने हर बार यही उत्तर दिया। पंडित जी इस पर चिढ गये कि हमारा आना व्यर्थ हुआ। फिर उन्होंने सोचा स्वामी जी के उत्तर का क्या कारण है। उन्हें स्पष्ट ज्ञात हो गया एक मुकदमें में झूठी साक्षी देकर आये थे। और फिर भी देने वाले थे। महर्षि दयानन्द यह वृत अपनी योग विभूति से जान गये थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी में अपूर्व ब्रह्मचर्य बल था

जोधपुर नगर में एक पहलवान रहता था जिसे अपने बल पर बहुत घमन्ड था। वह अकेला ही रहट चलाकर अपने स्नान के लिये हौज भरा करता था। लोग यही समझते थे कि इस हौज को कोई दूसरा नहीं भर सकता। महर्षि दयानन्द जी नगर में प्रातः काल भ्रमण के लिए जाया करते थे। एक दिन स्वामी जी ने उस हौज को भरते देख लिया। उस दिन वायु सेवन के लिये उधर से गुजरे तो उनके जी में आया कि हौज को भर देवें। और स्वामी जी ने उस हौज को भर दिया। और वायु सेवन को चल पड़े। जब पहलवान आया तो उसने हौज भरा देखा तो आश्चर्य चकित रह गया। स्वामी जी जब उधर से आये तो पहलवान ने कहा बाबा हौज तुमने भरा, स्वामी जी ने कहा हां मैने भरा, फिर पूछा तुम थके नहीं स्वामी जी ने कहा कि उससे भी व्यायाम पूरा नहीं हुआ, पहलवान हक्का-बक्का रह गया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिष्टता व निर्भयता

कर्णवास में कर्ण सिंह बड़े गुजर क्षत्री थे व जमीदार रईस थे, महर्षि दयानन्द जी को प्रमाण करके बोले कि हम कहां बैठे। स्वामी जी ने कहा कि जहां आपकी इच्छा है। कर्ण सिंह घमण्ड से बोले जहां आप बैठे है हम तो वहां बैठेंगे। एक ओर हट कर स्वामी जी बोले आइए बैठिये। उसने स्वामी जी से पूछा आप गंगा को मानते है। उन्होंने उत्तर दिया गंगा जितनी है उतनी मानते हैं वह कितनी है। फिर कहा हम सन्यासियों के लिये कमण्डल भर है। कर्ण सिंह गंगा स्तुति में कुछ श्लोक पड़ता है। स्वामी जी ने कहा यह तुम्हारी गप्प है भ्रम है। यह तो जल है इससे मोक्ष नहीं होता, मोक्ष तो सत्य कर्मों से होता है। फिर कर्ण सिंह बोले हमारे यहां रामलीला होती है वहां चलिये। स्वामी जी ने कहा तुम कैसे क्षत्रिय हो महापुरूषों का स्वांग बनाकर नाचते हो। यदि कोई तुम्हारे महापुरूषों का स्वांग बनाकर नाचे तो कैसा लगेगा। उसके लालाट पर चक्राकिंत का तिलक देखकर कहा तुम कैसे क्षत्रिय हो तूने अपने माथे पर भिखारियो का तिलक क्यों लगाया है और भुजाऐ क्यों दुग्ध की है। कर्ण सिंह बोले यह हमारा परम मत है यदि तुमने खण्डन किया तो हम बुरी तरह पेश आयेंगे। किन्तु स्वामी जी शान्त मन से खण्डन करते रहे। फिर कर्ण सिंह को क्रोध आ गया उसने म्यान से तलवार निकाल ली। स्वामी जी ने निर्भिकता से कहा यदि सत्य कहने से सिर कटता है तो काटलो, यदि लडना है तो राजाओं से लडे। शास्त्रार्थ करना है तो अपने गुरू रंगाचार्य को बुलालो और प्रतिज्ञा लिख लो यदि हम हार गये

तो अपना वेद मत छोड़ देंगे। कर्ण सिंह ने कहां उनके सामने तुम कुछ भी नहीं हो। स्वामी जी बोले रंगा स्वामी की मेरे सामने क्या गति है। क्रोधित कर्ण सिंह स्वामी जी को गाली देता रहा किन्तु स्वामी जी हंसते रहे। कर्ण सिंह ने तलवार चलाई स्वामी जी ने तलवार छीन ली और कहा चाहूं तो तेरे शरीर में घुसा दूं और तलवार टेक कर दो टुकड़े कर दिये और शान्त रहे। शिष्यों ने रिपोर्ट लिखने को कहा किन्तु स्वामी जी ने उसको माफ कर दिया और पूर्ववत् शान्त होकर उपदेश करने लगे।

अभ्यस्त अपराधी भी महर्षि दयानन्द योगी से डर भागे

कर्णवास में एक रात को कर्ण सिंह ने अपने तीन आदमियों को स्वामी जी सिर काटने भेजा। किन्तु उन अपराधियों को कुटी में जाने का साहस न हुआ। स्वामी जी खटका सुनकर बैठ गये। राव साहब ने अपने आदमियो को पुन: धमकाकर भेजा और कहा स्वामी जी का सिर काट लाओ। स्वामी जी चौकी पर बैठ कर ध्यान मगन हो गये। वह जब स्वामी जी की हत्या करने दरवाजे पर आये तो स्वामी जी के द्वार पर आकर भयंकर स्वर में ध्वनि की। और वे लोग ध्वनि की आवाज सुनकर घबरा गये और चित्त होकर गिर पड़े तलवारे छूट गई और किसी प्रकार उठकर भाग गये। सत्य के पथिक में बड़ी आत्म शक्ति होती है।

सन 1867 में अनूप शहर में मूर्ति पूजा पर शास्त्रार्थ

स्वामी जी अनूप शहर में आये, अध्यापक लाला बाबू ने स्वामी जी से कुछ पूछने का आग्रह किया स्वामी जी ने कहा कोई दूसरा व्यक्ति तुमको समझा देवे तो मैं तैयार हूँ मैं संस्कृत में ही बोलूंगा और वहां पर पंडित अम्बादत्त से मूर्ति पूजा पर शास्त्रार्थ हुआ और अम्बादत्त हट गये। बहुतों ने उसी समय से मूर्ति पूजा छोड़ दी और मूर्तियों को पानी में विसर्जन कर दिया और अम्बादत्त दुबारा शास्त्रार्थ करने का साहस न कर सका।

दयालु महर्षि दयानन्द जी ने विष देने वाले को क्षमा किया

अनूप शहर की घटना है, कि एक दिन एक ब्राह्मण ने स्वामी जी को विष दे दिया क्योंकि वह स्वामी जी की मूर्ति पूजा खंडन से तंग आ चुका था। स्वामी जी समझ गये और न्योली क्रिया से विष निकाल कर बच गये पर उस विष देने वाले को कुछ न कहा। सैय्यद मोहम्मद तहसीलदार ने उस ब्राह्मण को बन्दी बना लिया। वह स्वामी जी से बहु प्रेम करते थे और दशनार्थ रोज आया करते थे। स्वामी जी ने तहसीलदार से बोलना बन्द कर दिया उसने कारण पूछा तो स्वामी जी ने कहा मैं संसार को बन्दी बनाने नहीं आया हूँ। परन्तु उनको छुड़ाने आया हूं। यदि वह अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता तो मैं अपनी श्रेष्ठता क्यों छोडू। अन्त में तहसीलदार से कहकर उसको छुड़वा दिया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की सेवा भाव की चरम सीमा एक बीमार कोढ़ी को उठाना

सोमनाथ मन्दिर में मेला लगा हुआ था और मेले के बाहर एक कोढ़ी बीमार पड़ा हुआ था और चलने की स्थिति में नहीं था, कोई कहता मर गया कोई कहता जिन्दा है। पता चला कि पुलिस वालों ने मारते-मारते उसको बाहर फैंक दिया था। कोई कहता पैरो पर रस्सी बांध के बाहर फैंक दो। उसके सारे शरीर में खून और पीप बह रहा था। स्वामी जी ने कपड़ा भिगाकर उसके मुंह में पानी डाला, तब उसने आखें खेल दी थी और कातर दृष्टि से दया के भण्डार दयानन्द को देखने लगा। और उसको छोड़ना अच्छा न लगा और चिकित्सा केन्द्र का पता करके कोढ़ी को पीठ में उठाकर चिकित्सा केन्द्र में भर्ती करा दिया। विदाई के समय उसने कहा बाबा मुझे मरने का आशीर्वाद दो, और उसने कुछ देर में देह त्याग दिया। स्वामी जी नदी नहा करके योग गुरूओं की खोज में निकल पड़े।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का ज्ञानत्व, व्यक्तित्व, कर्मत्व की एक रूपता संसार का कल्याण कर गई

श्रद्धेय पाठक गण-अनेकों पुस्तकों का पढ़ना मात्र ज्ञान नहीं है। वास्तव में ज्ञानी वह है। जिसके सिद्धान्त पवित्र हो, तथा नियमपूर्वक सदा उत्तम कर्मों को करता हो। महर्षि दयानन्द जी ने वेदानुकूल मनुष्य मात्र को उपदेश देकर बतलाया कि ईश्वर सर्वत्र जो सर्वव्यापक सर्व सामर्थ्य वाला समदर्शी हैं वह सब जीवों के कर्मों को जानता है। उसी के अनुकूल सबको यथोचित फल देता है। अठाहरवीं व उन्नीसवी सदी के अन्धेरे युग में एक महाज्ञानी ईश्वर भक्त ही इतनी उंची बात कह सकता था। यह ईश्वर का नियम है कि अत्यंत अन्धकार के पीछे प्रकाश और दुख के पीछे सुख आता है उसी के अनुकूल जब भारत की संताने अपार दुखों में फंस गई तो ईश्वर ने अपने अनुग्रह से भारत का उद्धार करने ऋषि दयानन्द जी को भारत धरती पर भेजा। जिन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर वेदों के ज्ञान से प्रकाशित हो, अपने विद्या गुरू स्वामी विरजानन्द सरस्वती की आज्ञा सिर पर धर भारत की दुर्दशा को देख उसने भ्रमण कर वैदिक धर्म का उपदेश करना आरम्भ कर दिया और सारे संसार की आत्माओ को शान्ति मिलने का एक मात्र उपाय बतला दिया जिसके कारण अब और तबसे समस्त भूगोल में वेदों की महिमा फैलती जा रही हैं महर्षि दयानन्द जी का सम्पूर्ण जीवन की गति एक विशाल ग्रन्थ बन सकता है छोटे से प्रसंग लेख में नहीं समा सकता है।

महर्षि के जीवन पर एक दृष्टि–ऋषि दर्शन

लेo–स्व. श्री पं. चमूपति जी, एम. ए.

ऋषि दयानन्द की जन्मभूमि होने का गौरव गुजरात प्रान्त को है। पिता जन्म के ब्राह्मण थे, और भूमिहारी तथा जमीदारी का कार्य करते थे। शिव के बड़े भक्त थे। शिवरात्रि के दिन बालक को मन्दिर में ले गए और उसे उपवास करा जागरण का आदेश दिया। जब बड़े-बड़े शिव-भक्त सो गए, यह भावी ऋषि प्रयत्नपूर्वक जागता रहा। गीता के कथनानुसार–

''या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।''

इनके हृदय में भक्ति का नया उदय हुआ था। यह इसी रात में शिव को रिझा लेना चाहते थे। नींद आती पर पानी के छींटों से उसे दूर भगाते। इतने में एक चूहे ने सचेत किया! उस क्षुद्र पशु को महान् पशुपति के आगे उद्धत होता देखकर विचार आया-हो न हो यह शिव नहीं। दूसरों का व्रतभंग आलस्य ने किया था इनका तर्क ने। तर्क जीवन की भूमिका था, आलस्य मौत की। शिवरात्रि बीत गई, परन्तु शिवरात्रि की घटना हृदय में गड़-सी गई।

मूलशंकर के बढ़ते यौवन को दूसरी चेतावनी उनके चाचा और भगिनी की मृत्यु से मिली। चाचा के लाडले थे, उनका वियोग सहा न जाता था, भगिनी को महामारी ने मारा। इन दो मौतों का प्रभाव एक-सा नहीं हुआ। प्रथम, मृत्यु पर आश्चर्य चकित रहे और पाषाण-हृदय की उपाधि पाई, दूसरी पर बिलख-बिलख कर रोए।

शिक्षा और गृहत्याग–मूलशंकर की शिक्षा का प्रबन्ध इनके बाल्यकाल में किया गया था। इन्हें यजुर्वेद कण्ठस्थ था और भी बहुत कुछ पढ़ा-लिखा करते थे। पिता को पता लगा कि बालक पर वैराग्य का भूत सवार है। महात्मा बुद्ध के पिता की तरह इन्हें विवाह की डोरों में फांसने की ठानी। परन्तु ठीक विवाह की रात्रि को मूलशंकर घर से लुप्त हो गए।

वन यात्रा–मूलशंकर की कथा बहुत लम्बी है। पहले तो किसी ने ठग लिया। इन्हें शुद्ध चेतन नाम देकर नैष्ठिक ब्रह्मचारी बनाया। फिर यह संन्यासी हुए और दयानन्द नाम पाया। योगियों के पास योग साधन सीखते रहे। समाधि का आनन्द लाभ किया। गिरि-गुहाओं में घण्टों बिताए। पुस्तकें खोजीं और उनका अध्ययन किया। मैदानों में सोए, वृक्षों की शाखाओं में विश्राम किया। मूलकन्द खाकर भूख मिटाई। सार यह कि पूर्ण वनचर का-सा जीवन व्यतीत किया।

गुरु विरजानन्द के चरणों में-36 वर्ष से ऊपर के थे जब दण्डी विरजानन्द के द्वार पर विद्यावित्त के भिक्षु हुए। वहां पहली भेंट यह करनी पड़ी कि जो पुस्तक पढ़े हैं सब यमुना मय्या के अर्पण करो। हाथ लिखे पुस्तक बड़ी कठिनता से हाथ आए थे। पर गुरु-मुख का उपदेश भी तो सुलभ न था। जी कड़ा किया और गुरु की आज्ञा पालन की। आदर्श शिष्य आदर्श गुरु के चरणों में आदर्श शिक्षा प्राप्त कर रहा था। नित्य प्रति यमुना के जल से गुरु जी को स्नान कराते। कुटी में झाडू देते, गुरू की सेवा शुश्रुषा करते। गुरू ने एक दिन डण्ड से ताड़ना की, यतिवर ने गुरू-गौरव का प्रसाद मान स्वीकार की। अन्त में दीक्षान्त का समय आया। निर्धन ब्रह्मचारी गुरुदक्षिणार्थ लोगों की भीख मांग लाया। हाँ दैव! स्वीकार न हुई। 'क्या भेंट करूं।' जो तुम्हारे पास हो। 'मेरे पास मेरे अपने सिवा कुछ नहीं।' 'तो अपने आप भेट करो।' भेंट करी की। गुरु ने अंगीकार की। वही अपने आपकी भेंट मानो आर्य-समाज की स्थापना का प्रथम बीज थी। दयानन्द विरजानन्द का हुआ और विरजानन्द के हाथों सारे संसार का।'

पाखन्ड खण्डनी–अब पुष्कर के मेले में दयानन्द पहुंचता है, कुम्भ के महोत्व सब में दयानन्द गरजता है। वेद से उलटे जाते वैदिकधर्मियों को वेद के पथ पर लाना चाहता है। एक ओर सारी भ्रान्त आर्य जाति है दूसरी ओर अकेला दण्डधारी दयानन्द। 'पाखण्ड खण्डिनी पताका' के नीचे खड़ा कौपीनधारी ब्रह्मचारी आते जाते के लिए अचम्भा था। लोग कहते थे, गंगा के प्रवाह को रोकने का सामर्थ्य इसमें कहाँ? स्वयं भगीरथ आएं तो न रोक सकें।

तपस्या की पराकाष्ठा–ऋषि गरज-गरज कर हार गए। गंगा बहती गई और उसके साथ हिन्दू भ्रांतियों का प्रवाह भी बहता गया। ऋषि ने डेरा डण्डा उठाया और वनों की राह ली। पूर्ण वीतराग होने का व्रत किया कि कौपीन के अतिरिक्त कोई चीज पास न रखेंगे। महाभाष्य की एक प्रति पास थी, सो भी गुरुवर की सेवा में भेज दी। इसी कौपीन में दयानन्द सोते, इसी में फिरते। नहाकर इसे सूखने को डालते और स्वयं पद्मासन लगाकर बैठे रहते। हिमाच्छन्न नालों में क्या और जलती रेतों पर क्या दयानन्द का यही पहरावा रहा।

शास्त्रार्थ–कोई दो वर्ष दयानन्द ने इसी प्रकार तितिक्षा में काटे। फिर प्रचार में प्रवृत्त हुए। शास्त्रार्थ पर शास्त्रार्थ करते चले गए। हीरावल्लभ नाम के एक प्रौढ़ पण्डित ने सप्ताह भर संस्कृत में शास्त्रार्थ किया। उनका संकल्प था कि ऋषि से मूर्ति को भोग लगवा कर उठूंगा ऋषि का पक्ष सुना तो ठाकुर जी को उठाकर गंगा में

प्रवाहित किया और मुक्त कण्ठ से माना कि मूर्ति-पूजा शास्त्र विरूद्ध है।

ऋषि के उपदेश में जादू था। कण्ठियां उतरवा दी, मूर्तियां फिंकवा दीं, तिलक छाप की रीति मिटा दी। गायत्री का प्रचार किया। सन्ध्या लिख-लिख बांटी। स्त्रियों को मन्त्र जाप का अधिकार दिया। जाटों, राजपूतों को यज्ञोपवीत पहनाए।

आर्य धर्म की जय-चान्दपुर के शास्त्रार्थ में ऋषि ने आर्य जाति के इतिहास में एक नये युग का बीजारोपण किया। आर्य-आर्य तो आपस में विवाद करते ही थे। मुसलमानों, ईसाइयों से इनकी कभी न ठनी थी। इससे पूर्व प्रथा यह थी कि अहिन्दू हिन्दुओं का खण्डन करे और हिन्दू चुप रहकर सहन करते जाएं। आर्य धर्म आटे का दीया था। कच्चा धागा था, इसने इस भ्रान्ति को मिटा दिया। तीन दिन शास्त्रार्थ होना था। जिसमें मौलवियों और पादरियों के विरूद्ध ऋषि ने आर्य धर्म का पक्ष लेना स्वीकार किया था। एक ही दिन में ऋषि ने आर्य धर्म की स्थापना ऐसी दृढ़ता से कि दूसरे दिन वहां प्रतिपक्षियों का चिन्हमात्र भी शेष न था। आर्य धर्म की यह विजय धर्म के इतिहास में स्वराक्षरों में लिखने योग्य है।

अन्य मत वालों पर कृपा-ऋषि ने ईसाइयों को निमन्त्रण दिया कि आर्य धर्म को परखो और स्वीकार करो। इस निमन्त्रण में मोहिनी शक्ति थी। सर सैयद ऋषि के चरणों में आते। पादरी स्काट ऋषि के दर्शन करते। पादरी को ऋषि 'भक्त स्काट' कहते। भक्त की अनुपम उपाधि किसी आर्य-समाजी को न मिली, एक ईसाई ऋषि-भक्ति का यह अपूर्व प्रसाद ले गया। मुहम्मद उमर जन्म का मुसलमान था। उसे ऋषि ने अपने हाथों आर्य बनाया और अलखधारी नाम रखा। सारे संसार के लिए आर्य धर्म का द्वार खोलने का श्रेय वर्तमाय युग में ऋषि दयानन्द ही को है कर्नल अल्काट और मैडम ब्लवैटस्की अमेरिका से चलकर ऋषि दयानन्द के चरणों में आए। अपने पत्रों में ऋषि को 'गुरुदेव' कहकर सम्बोधित करते थे।

बन्धन काटने वाला-एक दिन एक ब्राह्मण ने पान का बीड़ा ला दिया। चबाने से प्रतीत हुआ कि इसमें विष है। ऋषि उठे, गंगा पास थी, उस पर जाकर न्योली कर्म किया और विष निकाल दिया। सैयद मुहम्मद तहसीलदार था। उसने दोषी को पकड़ वाया और दयानन्द के दरबार में ले गया। ऋषि से यह सहा न गया कि किसी को उनके कारण बन्धन में डाला जाए। क्या दयापूर्ण उत्तर दिया। मेरा काम तो बन्धन काटना है, बन्धन बढ़ाना नहीं।

बाल ब्रह्मचारी का बल-ऋषि जिस धर्म का प्रचार करना चाहते थे वह उनके जीवन में मूर्त्तरूप में विद्यमान था। दयानन्द का सबसे बड़ा बल ब्रह्मचर्य बल था। बाल ब्रह्मचारी को अधिकार था कि व्यभिचारियों को डांटे। विक्रम सिंह ने ब्रह्मचर्य बल का प्रमाण चाहा तो उसकी दो घोड़े की गाड़ी एक हाथ से पकड़कर रोक दी। सांईस बल लगाता है, घोड़े यत्न करते हैं, परन्तु गाड़ी हिलने में नहीं आती। पीछे की ओर देखा ऋषिवर गाड़ी रोके खड़े हैं। शरीर से तेज बरसता है। मुख कांति टकटकी लगाकर देखी नहीं जाती।

देवी पूजा-ब्रह्मचारी है और देवियों का आदर करता है। एक नन्ही लड़की बालकों के साथ खेल रही है। ऋषि देखते ही सिर झुका देते हैं। देखने वालों को धोखा है कि सामने खड़े वृक्ष को प्रणाम है, देवता-निन्दक को देवता की परोक्ष शक्ति ने देवता-पूजक बनाया है। ऋषि के मुख से सुनना ही था कि 'वह देखो! वह नन्ही बालिका मूर्त मातृ-शक्ति है। बस!' सभी के मुख से निकला 'धन्य! धन्य!!' देवियों के सत्कार-स्वरूप बाल ब्रह्मचारी दयानन्द धन्य! इस एक घटना में दयानन्द के देवियों के प्रति सम्पूर्ण भावों का मूर्त चित्र चित्रित है। देवियों की शिक्षा हो और शिक्षा के साथ पूजा हो-ये दो सूत्र ऋषि के देवी सम्बन्धी सिद्धान्त का सार हैं।

अछूत कोई नहीं-दयानन्द की दृष्टि में कोई अछूत न था। उमेदा नाई खाना लाया तो भरी सभा में स्वीकार किया। भक्त की भावना गेहूं के आटे में गुंधी थी, जो भक्त वत्सल की दृष्टि में लाख जन्माभिमानो की अपेक्षा अधिक सम्मान के योग्य थी। कसाई (मजहबी सिख) को किसी ने व्याख्यान सभा से हटाया। कहा, 'नहीं! मेरा व्याख्यान कसाइयों के लिए भी है।'

क्या आप जानते हैं कि सबसे पहला मलकाना रुस्तमसिंह किन शुभ कर-कमलों द्वारा पुनीत यज्ञोपवीत से अलंकृत हुआ था? ऋषि दयानन्द की दया बल-बली भुजाओं ने उसे अस्पृश्यता की गहरी गुहा से उठाया और आर्यत्व के पुण्ड शिखर पर बैठाया।

गोरक्षा-ऋषि का करुणाक्षेत्र मनुष्य जाति तक परमित नहीं था। प्राणिमात्र दयाननद की दया के पात्र थे ऋषि ने गोरक्षा के लिए भरसक प्रयत्न किया। एक निवेदन पत्र पर हिन्दू, मुसलमान, ईसाई-सब के हस्ताक्षर कराए कि गो-हत्या राजनियम से बन्द की जाए। ऋषि ने अपने नाम को सार्थक किया, जब दातारपुर के बाहर सड़क पर जाते हुए बैलगाड़ी कीचड़ में धंसी। गाड़ीवान का और बस न चलता था। बैलों पर सोटों की वर्षा करता चला जाता था। बैलों ने बहुतेरी गर्दनें हिलाई, कन्धों पर बहुतेरा दबाव डाला, पर गाड़ी न खिंची। गाड़ीवान हार कर रह गया। ऋषि को अधिक दया गाड़ीवान पर आई या बैलों पर-यह कहना कठिन है। दोनों के हृदय कृतज्ञता भार से अभारी थे जब राजों-महाराजों के गुरु लोकमान्य दयानन्द ने स्वयं कीचड़ में उतर बैलों का जुआ अपनी गर्दन पर डाला और जो भार दो बैलों से न खींचा गया था, अकेले अपने भुजाबल के जौहर से बाहर कर दिया।

ऋषि की लीला बाहुबली लीला है। जिस पक्ष पर दृष्टि डालो

वही कहता है, मैं सबसे मीठा हूं। वस्तुत: गुड़ जहां से खाओ मीठा लगता है। इस लीला के अवसान में भी वह महत्त्व है जो और मनुष्यों के जीवन में नहीं।

प्रचार की धुन-ऋषि दयानन्द ने अन्तिम यात्रा जोधपुर की ओर की! इस समय तक ऋषि ने बीसियों आर्यसमाजों की स्थापना कर ली थी। पंजाब, पश्चिमोत्तर (वर्तमान संयुक्त प्रान्त), राज-पूताना-ये सब प्रदेश चरणों में सिर झुका चुके थे। कितने राजपूत नरेश शिष्य बन चुके थे। जोधपुर में भी महाराज ने बुलाया था। चरण-सेवकों ने विनय की, ''वहां के लोग क्रूर स्वभाव के पुरुष हैं, आप की शिक्षा का गौरव नहीं समझेंगे। सम्भव है, प्राणो के बैरी हो जाएं।'' दयावीर दयानन्द ने उत्तर दिया-''तभी तो जा रहा हूं। बिगड़ों के सुधार की और अधिक आवश्यकता है। रही मेरे प्राण-घात की बात, सो तो यदि मेरी एक-एक उंगली से बत्ती का काम लिया जाए, और इसी से किसी को सीधा रास्ता सूझ जाए तो मेरे जीवन का प्रयोजन इसी बात में सिद्ध हो गया। कहने की आवश्यकता नहीं कि ऋषि के पहुंचते ही राजा चरणों का भक्त हो गया, प्रजा अनुरागरक्त हो गई। प्रतिदिन आनन्द वर्षा होने लगी।

निर्भयता-एक दिन राजा ने महाराज को अपने डेरे पर निमन्त्रित किया। ऋषि बिना सूचना दिए जा पहुंचे। राजा के दरबार में उसकी प्यारी वेश्या नन्हीं जान आई हुई थी। राजा खिसियाने हुए। उसे पालकी में बैठाकर उठवा तो दिया परन्तु ऋषि से आंखें चार न हो सकीं। ऋषि यह कुत्सित दृश्य देखकर लाल हो गए। गरजकर कहा-''सिंहों की गोद में कुतियों का क्या काम?''

दया आदर्श-यह निर्भयता ऋषि के लिए विष सिद्ध हुई। विरोधियों ने दल बना लिया। कुछ दिनों में ही जगन्नाथ रसोइए को घूस देकर वीतराग योगी-राज को विष दिलवा दिया। ऋषि ने उस समय भी अपनी स्वाभाविक दया से काम लिया। जगन्नाथ ने स्वयं माना, 'ऋषिवर! यह अपराध मुझ से हुआ है।' ऋषि ने उसे धन दिया और आग्रहपूर्वक कहा शीघ्र आंगल राज्य से बाहर हो जाओ। जिससे तुम्हारे प्राणों पर संकट न आए।

विष का प्रभाव धीरे-धीरे हुआ। दस्त आने लगे पेट का शूल बढ़ता गया। बार-बार मूर्छा होने लगी। महीना भर यह क्लेश रहा। वैद्य चकित थे कि इस वेदना में ऋषि संतोषपूर्वक जी रहे हैं यह ऋषि का चमत्कार था।

देहावसान-जोधपुर से आबू और आबू से अजमेर गए। दीवाली की सायंकाल को, जहां घर-बार गली-बाजार में दीपक जलाए गए, यह जाति-कुलदीप, संसार-समुद्र का ज्योति-स्तम्भ देखते-देखते जगमगाती चकाचोंध से चुंधियाती रात्रि में अन्तर्हित हो गया। देखने वालों ने देखा कि बुझते दीपक ने संभाल लिया। मृत्यु समय समीप आया देखकर ऋषि सचेत हुए। क्षीर कराया, शरीर पौंछवाया, चनों का रसा लिया, प्रभु का भजन, मन्त्रों का पाठ करते रहे। अन्त में 'परमेश्वर! तैने अच्छी लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हो।' यह शब्द कहे और अत्यन्त आह्लादपूर्वक प्राण त्याग दिए।

देह छोड़ते समय दयानन्द के मुख पर एक विचित्र क्रान्ति थी। पूर्ण किए कर्त्तव्यों का सन्तोष छाती को उभारे हुए था। जगज्जनक की गोदी में परम पिता का प्यारा पुत्र लालायित हृदय साथ लिये लौट रहा था। पिता की आज्ञा का पालन किया है, यह आह्लाद था, शान्ति थी, सन्तोष था।

दृष्टि रसायन-जीवन प्रचार के अर्पण हुआ था, मरण भी प्रचार का साधन हुआ। गुरुदत्त एम. ए. पंजाब यूनिवर्सिटी में प्रथम रहे थे, उनकी यह ऋषि से प्रथम भेंट थी। बातचीत नहीं हुई, शंका-समाधान नहीं हुआ, प्रश्नोत्तर का अवसर नहीं मिला, परन्तु चंचल, शंका का अवतार, तर्क-मूर्त्ति, गुरूदत्त ऋषि पर आसक्त है। उसे कोई सन्देह नहीं रहा, क्षण मात्र में उसकी काया पलट हो गई है एक दृष्टि ने कुछ का कुछ कर दिया।

ऋषि की दृष्टि रसायन है। आओ, उस दृष्टि के दर्शन करो। खोटा सिक्का है? लाओ, खरा सोना हो जाएगा। ऋषि के जीवन के अध्ययन से शिक्षा लाभ करो। उनके ग्रन्थों को पढ़ो और उनके जीवन का मिलान उनके लेखों से करो। भर्तृ हरि ने कहा है:

मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्।

यह वाक्य ऋषि दयानन्द के महत्त्व का सार है।

अमर दयानन्द-आज केवल भारत ही नहीं, सारे धर्मिक, सामाजिक राजनैतिक संसार पर दयानन्द का सिक्का है। मतों के प्रचारकों ने अपने मन्तव्य बदल लिए हैं, धर्म पुस्तकों के अर्थों का संशोधन किया है। महापुरूषों की जीवनियों में परिवर्तन किया है। ऋषि का जीवन इन जीवनियों में बोलता है, ऋषि मरा नहीं करते, अपने भावो के रूप में जीते हैं। दलितोद्धार का प्राण कौन है? पतित पावन दयानन्द। समाज सुधार की जान कौन है? आदर्श सुधारक दयानन्द। शिक्षा प्रचार की प्रेरणा कहां से आती है? गुरूवर दयानन्द के आचरण से। वेद का जय-जयकार कौन पुकारता है? महर्षि दयानन्द। देवी सत्कार का मार्ग कौन दिखाता है? देवीपूजक दयानन्द। ब्रह्मचर्य का आदर्श कौन है? बाल-ब्रह्मचारी दयानन्द। गोरक्षा के मिष से प्राणिमात्र पर करूणा दिखाने का बीड़ा कौन उठाता है? करूणानिधि दयानन्द। आओ, हम अपने आपको ऋषि के रंग में रंगें। हमारा विचार ऋषि का विचार हो, हमारा आचर ऋषि का आचार हो, हमारा प्रचार ऋषि का प्रचार हो। हमारी प्रत्येक चेष्टा ऋषि की चेष्टा हो। नाड़ी-नाड़ी से ध्वनि उठे:-ऋषि दयानन्द की जय

बोधोत्सव को सार्थक बनाएं

लेo–श्री महात्मा चैतन्यमुनि महर्षि दयानन्द धाम सुन्दर नगर (मण्डी)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थप्रकाश के अष्टम् समुल्लास में सृष्टि का प्रयोजन बताते हुए कहा है कि ईश्वर के सृष्टिनिमित गुण-कर्म-स्वभाव का साफल्य तथा प्रकाशन और जीवों के कर्मों का यथावत भोग करना तथा अपवर्ग अर्थात् सब दु:खों से छूट मोक्ष प्राप्त करना...। उनका कथन है कि जीवों को यहां पर अपने कर्मों का भोग करना है और साथ ही परमात्मा के गुण, कर्म, स्वभावानुसार अपना जीवन बनाकर मोक्ष प्राप्त करना है। उपासना से उनका भाव है-परमात्मा की समीपता से अपने गुण, कर्म, स्वभाव भी तद्वत् बनाना। यह एक ध्रुव सत्य है कि मुक्ति प्राप्त किए बिना संसार में कोई भी व्यक्ति दु:खों से नहीं छूट सकता है मगर इसके लिए दु:ख के कारणों को पहले जानना अपेक्षित है। वास्तव में अपने स्वरूप को भूलने के करण ही हम दु:खों का बोझा ढोए फिर रहे हैं। जब व्यक्ति स्वयं को जानेगा तभी तो उसे पता चल सकेगा कि उसकी मंजिल क्या है? उसे जाना कहां है? स्वयं को जानने की बात जितनी कह देने में आसान है, सिद्धि के मामले में उतनी ही कठिन भी है। कठिन है का अर्थ यह कदापि नहीं है कि असंभव है। इस संसार में कुछ भी असंभव नहीं है। मगर हां सतत अभ्यास और दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है। हमें पहले यह जानना होगा कि बन्धन क्या है मुक्ति क्या है? अज्ञानता के कारण आज लोगों को ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति तीन अनादि तत्वों के बारे में तनिक भी ज्ञान नहीं है। कोई भौतिक प्रकृति को ही, कोई आत्मा और प्रकृति को, तो कोई मात्र परमात्मा की ही सत्ता को मानता है। महर्षि दयानन्द जी ने वेद के आधार पर परमात्मा, आत्मा और प्रकृति को अनादि सत्ताएं सिद्ध किया है। मुक्ति के बारे में भी लोगों ने अनेक प्रकार के भ्रम पाल रखे हैं। कोई चौदहवें लोक की शिखा पर स्थित मोक्ष शिला की प्राप्ति को, कोई वासनाच्छेद होकर जीव का दीपशिखा की तरह समाप्त हो जाने को, कोई चौथे आसमान पर जाकर विवाह बाजे-गाजे चमकीले वस्त्र आदि धारण करके आनन्द भोगने को, कोई सातवें आसमान पर शरीर की नदी में हूरों के साथ रमण करने को, कोई कैलाश में जाकर पार्वती सदृश स्त्री से युक्त होकर आनन्द भोगने को, कोई श्रीपुर में जाकर अन्नपान-वस्त्र-स्थान आदि की प्राप्ति को तथा कोई सायुज्य आदि पांच प्रकार की मुक्तियों को और कोई ब्रह्म में लय हो जाने को मोक्ष या मुक्ति कहता है। अब तो जब से तथाकथित गुरुओं की बाढ़ आई है, मुक्ति एक उपहास मात्र बनकर रह गई है।

महर्षि जी के अनुसार समस्त दु:खों से छूटकर सर्वदा आनन्द में रहना मुक्ति और आवागमन के चक्कर में भटकते रहना ही बन्धन है। इस क्रम में बन्धन में छूटने और मुक्ति प्राप्त करने का चिन्तन गहराई से करना चाहिए। बोध से हमें प्रतिबोध की ओर अग्रसर होना है। बोध तो केवल वाक्यजन्य ज्ञान है मगर प्रतिबोध है निदिध्यासन द्वारा उस ब्रह्म की अनुभूति करके मुक्ति को प्राप्त करना। वेद में कहा गया है-

ऋषो बोधप्रतीबोधस्वप्नो यश्च जागृविः।
तौ ते प्राणस्य गोप्तारौ दिवा नक्तं च जागृताम्।।

(अथर्व. 05-30-10)

बोध और प्रतिबोध दो देखने वाले हैं जो एक-एक न सोने वाला और जागने वाला है। हमारे प्राण के ये दोनों रखवाले दिन-रात जागते रहें। व्यक्ति को बन्धन के कारणों का बोध हो तो गया मगर यदि उसने उन्हें दूर करने के लिए प्रयास नहीं किया तो वह बन्धन से नहीं छूट सकेगा। इसलिए महर्षि जी नौवें समुल्लास के प्रारम्भ में ही लिखते हैं-

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्या मृत्युं तीर्त्वा विद्यामृतमश्नुते।।

(यजु. 40-14)

जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ ही साथ जानता है। वह अविद्या अर्थात् कर्मोपासना से मृत्यु को तर के विद्या अर्थात् यथार्थ ज्ञान से मोक्षको प्राप्त होता है। योगदर्शन (2-3) में पंच कलेशों के बारे में कहा गया है-**अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पंच क्लेशाः।** महर्षि इस सम्बन्ध में लिखते हैं-**अनित्याशुचिदः खानात्मसु नित्युशचि-सुखात्मख्यातिरविद्या।** यह योगसूत्र का वचन है-जो अनित्य संसार और देहादि में नित्य अर्थात् जो कार्यजगत् देखा सुना जाता है, सदा रहेगा, सदा से है और योगबल से यहीं देवों का शरीर सदा रहता है, वैसी विपरीत बुद्धि होना अविद्या का प्रथम भाग है। अशुचि अर्थात् मलमय स्त्रीयादि के और मिथ्याभाषण, चोरी आदि अपवित्र में पवित्र बुद्धि दूसरा, अत्यन्त विषय सेवनरूप दु:ख में सुख बुद्धि आदि तीसरा, अनात्मा में आत्मबुद्धि करना अविद्या का चौथा भाग है। यह चार प्रकार का विपरीत ज्ञान अविद्या कहाती है। इसके विपरीत अर्थात् अनित्य में अनित्य और नित्य में नित्य,

अपवित्र में अपवित्र और पवित्र में पवित्र, दु:ख में दु:ख, सुख में सुख, अनात्मा में अनात्मा और आत्मा में आत्मा का ज्ञान होना विद्या है। अर्थात् '**वेत्ति यथावत तत्वं पदार्थस्वरूपं यया सा विद्या, यया तत्वस्वरूपं न जानाति, भ्रमादन्यस्मिन्न-न्यन्निश्चिनोति साऽविद्या।**' जिससे पदार्थों का यथार्थ स्वरूप बोध होवे, वह विद्या और जिससे तत्वस्वरूप न जान पड़े, अन्य में अन्य बुद्धि होवे वह अविद्या कहाती है। इसलिए केनोपनिषद् के ऋषि कहते हैं-

प्रतिबोध विदितं मतममृतत्वं हि विन्दते।
आत्मना विन्दते वीर्यं विद्या विन्दतेऽमृतम्।। (2-4)

अर्थात् प्रतिबोध से जाना गया ब्रह्म यथार्थ ज्ञान है। इस ब्रह्म-ज्ञान से मुमुक्षु पुरुष निश्चय से मृत्युरहित जीवन मुक्त दशा को प्राप्त होता है। आत्मस्वरूप ज्ञान से योगबल अणिमादि सिद्धियों को प्राप्त होता है और ब्रह्मज्ञान से जन्मरमरणादि दु:खरहित मोक्ष को प्राप्त होता है। यही सत्यधर्म है जिसकी प्राप्ति हेतु महामना याज्ञवल्क्य जी का कहना है-**अयं तु सत्यधर्मो यत्योगेन आत्मदर्शनम्।** महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में लिखते हैं-

'समाधिनिर्धूतमलस्य चेतसो निवेशितस्यात्मनि यत्सुखं मे भवेत।
न शक्यते वर्णयितुं गिरा तदा स्वयन्तदन्तः करणेन गृह्यते।।'

यह उपनिषद् का वचन है-जिस पुरुष के समाधियोग से अविद्यादि मल नष्ट हो गए हैं, आत्मस्थ होकर परमात्मा के योग का सुख होता है। वह वाणी से कहा नहीं जा सकता क्योंकि उस आनन्द को जीवात्मा अपने अन्त:करण से ग्रहण करता है।

उपासना शब्द का अर्थ समीपस्थ होना है। अष्टांग-योग का अनुपालन करते हुए जब साधक प्रत्याहार द्वारा अपनी इन्द्रियों को अन्तुर्मुखी कर लेता है। उसके बाद योग का महत्त्वपूर्ण अंग है-'धारणा'। देशबन्धचित्तस्य धारणा। (यो. द. 3-1) अर्थात् चित्त को किसी विशेष स्थान पर स्थिर करना धारणा है। महर्षि जी इस बारे में लिखते हैं-जब उपासना योग के पूर्वोक्त पांचों अंग सिद्ध हो जाते हैं, तब उसका छठा अंग धारणा भी यथावत प्राप्त होता है। (धारणा) उसको कहते हैं कि मन को चंचलता से छुड़ाके नाभि, हृदय, मस्तक, नासिका और जीभ के अग्रभाग आदि देशों में स्थिर करके ओंकार का जप और उसका अर्थ जो परमेश्वर है उसका विचार करना। (ऋ. भा. भू.) अन्यत्र वे इस बारे में लिखते हैं-'नाभि, हृदय, मूर्धाज्योति अर्थात् नेत्र, नासिकाग्र, जिव्हाग्र इत्यादि देशों के बीच में चित्त को योगी धारण करें तथा बाह्यविषय जैसा कि ओंकार व गायत्री मन्त्र इनमें चित्त लगावे। क्योंकि **तज्जपस्तर्थभावना** (यो. द. 1-2) यह सूत्र है योग का। इसका योगी जप अर्थात् चित्त से पुन: पुन: आवृत करे और इसका अर्थ जो ईश्वर उसको हृदय में विचारे। **तस्य वाचकः प्रणवः** (यो. द. 1-27) ओंकार का वाच्य ईश्वर है और उसका वाचक ओंकार है। बाह्य विषय से इनको ही लेना और कोई नहीं क्योंकि अन्य प्रमाण कहीं नहीं (दया. शास्त्रा.)'

योग का सातवां अंग 'ध्यान' है। **तत्र प्रत्यैकतानता ध्यानम्** (यो. द. 3-2) इस सम्बन्ध में महर्षि जी का कथन है-'धारणा के पीछे उसी देश में ध्यान करने और आश्रय लेने योग्य जो अन्तर्यामी व्यापक परमेश्वर है, उसके प्रकाश और आनन्द में अत्यन्त विचार और प्रेम भक्ति के साथ इस प्रकार प्रवेश करना है कि जैसे समुद्र के बीच में नदी प्रवेश करती है। उस समय में ईश्वर को छोड़कर किसी अन्य पदार्थ का स्मरण नहीं करना किन्तु उसी अन्तर्यामी के स्वरूप और ज्ञान में मग्न हो जाना, इसी का नाम ध्यान है। (ऋ. भा. भू.)' वे इस सम्बन्ध में अन्यत्र (दया. शात्र.) कहते है-'उन देशों में अर्थात् नाभि आदिकों में ध्येय जो आत्मा उस आलम्बन की ओर चित्त की एकतानता अर्थात् परस्पर दोनों की एकता, चित्त आत्मा से भिन्न न रहे तथा आत्मा चित्त से पृथक न रहे, तब जानना कि ध्यान ठीक हुआ।' योंग का आठवां अंग 'समाधि' है। यह स्थिति उपासना की प्राप्ति है अर्थात् समाधि के लिए ही व्यक्ति योगाभ्यास करता है। यह स्थिति अपने स्वरूप को पहचानने की है। अपनी पहचान ही परमात्मा की सिद्धि और मुक्ति दिलाने वाली है। इस सम्बन्ध में योगीराज का कथन है-'ध्यान और समाधि में इतना ही भेद है कि ध्यान में तो ध्यान करने वाला जिस मन से जिस चीज का ध्यान करता है, वे तीनों विद्यमान रहते हैं। परन्तु समाधि में केवल परमेश्वर ही के आनन्द स्वरूप ज्ञान में आत्मा मगन हो जाती है, वहां तीनों का भेदभाव नहीं रहता। जैसे मनुष्य जल में डुबकी मारकर थोड़ा समय भीतर ही रुका रहता है, वैसे ही जीवात्मा परमेश्वर के बीच में मगन होकर फिर बाहर को आ जाता है... जैसे अग्नि के बीच में लोहा भी अग्नि रूप हो जाता है, इसी प्रकार ईश्वर के ज्ञान में प्रकाशमय होकर अपने शरीर को भी भूले हुए के समान जाकर आत्मा को परमेश्वर के प्रकाशस्वरूप आनन्द और ज्ञान में परिपूर्ण करने को समाधि कहते हैं।' (ऋ. भा. भू.)

महर्षि दयानन्द जी के बोधोत्सव पर हम भी बोध से प्रतिबोध की ओर बढ़ने का संकल्प लेकर अपने जीवन को सार्थकता प्रदान करें क्योंकि अन्ततः देश, समाज तथा विश्व का कल्याण किसी आध्यात्मिक महापुरुष द्वारा ही होना सम्भव है। बोधोत्सव पर हमें महर्षि के उसी आध्यात्मिक पक्ष को आत्मसात् करने की आवश्यकता है।

भारतीय दर्शन : और महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण

ले.-आचार्य श्री उदयवीर जी शास्त्री

भारतीय दर्शन साधारण रूप से दो भागों में विभक्त हैं-आस्तिक दर्शन और नास्तिक दर्शन। आस्तिक दर्शनों में इन छह दर्शनों की गणना की जाती है-सांख्य, वैशेषिक, योग, न्याय, वेदान्त, मीमांसा। नास्तिक दर्शनों में चार्वाक दर्शन, बौद्ध दर्शन तथा जैन दर्शन माने जाते हैं। आस्तिक-नास्तिक दर्शनों का भेद वेदों की मान्यता एवं अमान्यता पर आधारित है। फलत: सभी आस्तिक दर्शन वेदों को न केवल प्रमाण, अपितु 'स्वत: प्रमाण' स्वीकार करते हैं; जबकि नास्तिक दर्शनों को वेदों का किसी प्रकार का प्रमाण तक भी स्वीकार नहीं। इसलिए आस्तिक-नास्तिक दर्शनों के प्रतिपाद्य सिद्धान्तों में अनेकत्र भेद का होना स्वाभाविक है; परन्तु जब आस्तिक दर्शनों में भी परस्पर भेदमूलक मान्यताएं सम्मुख आती हैं, तो यह बड़ा असमंजस-सा प्रतीत होता है।

महर्षि दयानन्द को अपने काल में सर्वसाधारण समाज की तथा समाज में मूर्द्धन्य समझे जाने वाले विशिष्ट अंगों की भी गिरती हुई दशा को सुधार की ओर परिवर्तित करने के लिए सभी तरह के व्यक्तियों के साथ जूझना पड़ा, उसने देखा, कि शास्त्रीय चर्चाओं में विद्वान् समझे जाने वाले व्यक्ति भी बाद आदि कथाओं में दार्शनिक पद्धति की कितनी उच्छृंखलता के साथ अवहेलना करते हैं। दार्शनिक तथ्यों को अपने निराधार मनघड़न्त विचारों के अनुसार तोड़-मरोड़ कर निर्लज्जता से जनता के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। मूल दर्शनों की संस्थापना करने वालों को भी एक दूसरे का विरोधी बताते हैं, क्या साक्षात्कृतधर्मा ऋषि-मुनियों का कथन परस्पर विरुद्ध माना जा सकता है? सत्य सदा एक होता है, सत्य के दो रूप नहीं हो सकते, तब क्या दर्शनों में उन ऋषि-मुनियों ने सत्य का उत्पादन न कर असत्य को प्रस्तुत किया है? ऋषि ने दर्शनों की इस दुर्दशा को गहराई के साथ अन्तर्दृष्टि से देखा-परखा और एक सूत्र खोज निकाला, जिसमें सब दर्शन-माला में मोतियों के समान गुंथे हुए हैं।

सभी दर्शनों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय सृष्टि प्रक्रिया का विवरण प्रस्तुत करना है। निश्चित है, सृष्टि (जगत्=विश्व) की रचना का प्रकार एक ही हो सकता है। ऐसी कल्पना सर्वथा निराधार होगी, सर्गादिकाल में अपने अव्यक्त कारणों से विश्व की रचना के प्रकार अनेक हों, और एक-दूसरे से भिन्न हों। इसलिए दर्शनों के जिन व्याख्याकारों ने दर्शनों में विश्व के विभिन्न उपादान कारणों का एवं उनसे उत्पाद्यमान विश्व की विभिन्न रचना-प्रक्रिया का उल्लेख उभारा है, वह संगत नहीं कहा जा सकता है। इसको वास्तविक रूप से समझने और इसके समन्वय के लिए ऋषि ने अपने अमर-ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश में वह सूत्र इस प्रकार प्रस्तुत किया है-

"(पूर्वपक्ष) जैसा सत्यासत्य और दूसरे ग्रन्थों का परस्पर विरोध है वैसे अन्य शास्त्रों में भी है। जैसा सृष्टिविषय में छह शास्त्रों का विरोध है। मीमांसा कर्म, वैशेषिक काल, न्याय परमाणु, योग पुरुषार्थ, सांख्य प्रकृति और वेदान्त ब्रह्मा से सृष्टि की उत्पत्ति मानता है; क्या यह विरोध नहीं हैं? (उत्तरपक्ष) प्रथम तो बिना सांख्य और वेदान्त के दूसरे शास्त्रों में सृष्टि की उत्पत्ति प्रसिद्ध नहीं लिखी और इनमें विरोध नहीं, क्योंकि तुमको विरोधाविरोध का ज्ञान नहीं। मैं तुमसे पूछता हूं कि विरोध किस स्थल में होता है? क्या एक विषय में अथवा भिन्न-भिन्न विषयों में? (पूर्वपक्ष) एक विषय में अनेकों का परस्पर विरुद्ध कथन हो, उसको विरोध कहते हैं, यहां भी सृष्टि का एक ही विषय है। (उत्तरपक्ष) क्या विद्या एक या दो? (पूर्वपक्ष) (उत्तरपक्ष) एक है। जो एक है तो व्याकरण, वैद्यक, ज्योतिष आदि का भिन्न-भिन्न विषय क्यों हैं? जैसा एक विद्या में अनेक अवयवों का एक-दूसरे से भिन्न प्रतिपादन होता है, वैसे ही सृष्टि विद्या के भिन्न-भिन्न छह अवयवों का शास्त्रों में प्रतिपादन करने से इनमें कुछ भी विरोध नहीं। जैसे घड़े के बनाने में कर्म, समय, मिट्टी, विचार, संयोग-वियोग आदि का पुरुषार्थ, प्रकृति के गुण और कुम्मार कारण है; वैसे ही सृष्टि का जो कर्म कारण है, उसकी व्याख्या मीमांसा में, समय की व्याख्या वैशेषिक में, उपादान कारण की व्याख्या न्याय में, पुरुषार्थ की व्याख्या योग में, तत्त्वों के अनुक्रम से परिगणन की व्याख्या सांख्य में और निमित्तकारण जो परमेश्वर है उसकी व्याख्या वेदान्त शास्त्र में है। इससे कुछ भी विरोध नहीं। जैसे वैद्यक शास्त्र में निदान, चिकित्सा, औषधिदान और पथ्य के प्रकरण भिन्न-भिन्न कथित हैं, परन्तु सबका सिद्धान्त रोग की निवृत्ति है, वैसे ही सृष्टि के छह कारण हैं। इनमें से एक-एक कारण की व्याख्या एक-एक शास्त्रकार ने की है। इसलिए इनमें कुछ भी विरोध नहीं। इसकी विशेष व्याख्या सृष्टि प्रकरण में कहेंगे।"

एवमेव पूर्व निर्देशानुसार इस विषय को अष्टम समुल्लास के सृष्टि प्रकरण-प्रसंग में इस प्रकार बताया है-

''(पूर्वपक्ष) सृष्टि विषय में वेदादि शास्त्रों का अवरोध है व विरोध? (उत्तरपक्ष) अविरोध है। (पूर्वपक्ष) जो अविरोधी है तो–

तस्माद्वा एत्तस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः, आकाशाद्वायुः, वायोरऽग्निः, अग्नेरापः, अदभ्यः पृथिवी, पृथिव्या औषधयः, ओपधिभ्योऽन्नम्, अन्नादेतः रेतसः पुरुषः स व एष पुरुषोऽन्नर-समयः।

यह तैत्तिरीय उपनिषद् (ब्रह्मानन्द वल्ली।) का वचन है। उस परमेश्वर और प्रकृति से आकाश अवकाश अर्थात् जो कारण रूप द्रव्य सर्वत्र फैल रहा था, उसको इकट्ठा करने से अवकाश उत्पन्न सा होता है, वास्तव में आकाश की उत्पत्ति नहीं होती, क्योंकि बिना आकाश के प्रकृति और परमाणु कहां ठहर सकें? आकाश के पश्चात् पृथ्वी, पृथ्वी से औषधि, औषधियों से अन्न, अन्न से वीर्य, वीर्य से पुरुष अर्थात् शरीर उत्पन्न होता है। यहां आकाशादि क्रम से, और छान्दोग्य में अग्न्यादि, ऐतरेय में जलादि क्रम से सृष्टि हुई। वेदों में कहीं पुरुष कहीं हिरण्यगर्भ आदि से; मीमांसा में कर्म, वैशेषिक में काल, न्याय में परमाणु, योग में पुरुषार्थ, सांख्य में प्रकृति और वेदान्त में ब्रह्म से सृष्टि की उत्पत्ति मानी हैं। अब किसको सच्चा और किसको झूठा मानें?

(उत्तरपक्ष) इसमें सब सच्चे, कोई झूठा नहीं। झूठा वह है जो विपरीत समझता है, क्योंकि परमेश्वर निमित्त और प्रकृति जगत् का उत्पादन कारण है।... छह शास्त्रों में अविरोध देखो इस प्रकार है। मीमांसा में-''ऐसा कोई भी कार्य जगत् में नहीं होता कि जिसके बनाने में कर्म चेष्टा न की जाए।'' वैशेषिक में-'समय न लगे बिना बने ही नहीं।' न्याय में-'उपादान कारण न होने से कुछ भी नहीं बन सकता।' योग में-'विद्या, ज्ञान, विचार न किया जाए तो नहीं बन सकता।' सांख्य में-'तत्त्वों का मेल न होने से नहीं बन सकता।' और वेदान्त में-'बनाने वाला न बनावे तो कोई भी पदार्थ उत्पन्न न हो सके।' इसलिए सृष्टि छह कारणों से बनती है; उन छह कारणों की व्याख्या एक-एक की एक-एक शास्त्र में है, इसलिए उनमें विरोध कुछ भी नहीं।'

[सत्यार्थ-प्रकाश, अष्टम समुल्लास; पृष्ठ 189-190, उक्त संस्करण]

उक्त सन्दर्भों द्वारा भारतीय दर्शनों में अविरोध प्रकट करने के लिए ऋषि ने जो सूत्र सुझाया, उसका तात्पर्य केवल इतना है कि दर्शनों के मुख्य प्रतिपाद्य विषय-सृष्टि प्रक्रिया अर्थात् सर्ग रचना के विभिन्न कारण रूप अंगों का उत्पादन एक-एक दर्शन में हुआ है; इसलिए प्रत्येक दर्शन परस्पर विरोधी न होकर एक-दूसरे के पूरक हैं। सर्ग रचना रूप एक ही अर्थ का विवरण प्रस्तुत करने में सबका तात्पर्य है। सर्ग रचना के प्रसंग से सर्ग के स्रष्टा परमात्मा का तथा भोक्ता जीवात्मा का विशद वर्णन भी दर्शनों के प्रतिपाद्य विषय में आ जाता है। इसी क्रम से भोक्ता जीवात्मा के भोग साधन देह इन्द्रिय आदि का विवरण प्रसंगानुसार दर्शनों में प्रस्तुत किया गया है।

मीमांसा-शास्त्र में कर्मों का वर्णन है। ये कर्म ऐहिक एवं पारलौकिक फलों के उत्पादक हैं। सामाजिक अथवा मानवीय दृष्टि से यह कर्म यज्ञा-अनुष्ठान रूप हैं और मानव के एवं प्राणिमात्र के अभ्युदय तथा सुख-सुविधा व अनुकूलता का साधन समझा जाता है। गहन शास्त्रीय दृष्टि से विचारने से प्रतीत होता है, यह कर्म समस्त विश्व में अनुस्यूत हैं; उस कर्म व क्रिया को प्रतीक रूप में प्राणी के अभ्युदय के लिए प्रस्तुत शास्त्र में संकलित किया गया। इससे पूर्व भी यह सब अनुष्ठान ऋषियों द्वारा बोधित मानव समाज में क्रमानुक्रमपूर्वक चले आते हैं। सृष्टि-रचना में इनके अनुषक्त होने की भावना शास्त्र द्वारा अनेक प्रकार से प्रकट को गई है। इस रूप में जगत्स्रष्टा की भावना को उपनिषद् यह कर कर प्रकट करते हैं-

''आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत्,
नान्यत् किञ्चन भिषत्।
स ईक्षत लोकान्नु सृजा इति।
स इमांल्लोका नष्टजत।''

[ऐतरेय उपनिषद्, प्रारम्भिक भाग]

सर्ग से पूर्व एक आत्मा ही था; अन्न कोई पदार्थ व्यापार या क्रिया करता हुआ न था। क्योंकि तब यह समस्त विश्व अपने मूल उपादान कारण में लीन था। उस ब्रह्म रूप आत्मा ने ईक्षण किया-मैं लोकों का निर्माण करूं। उसने इन सब लोकों को बनाया। उसी को अन्यत्र 'स्वाभाविकी ज्ञान बल क्रिया च' कहा है। उस जगत्स्रष्टा में अनन्त ज्ञान, बल, क्रिया सम्भव है। वह उपादान तत्त्वों को अपनी अनन्त शक्ति से ज्ञानपूर्वक प्रेरित कर जगत् की रचना करता है। परमात्मा के 'प्रेरणा रूप, कर्म अथवा क्रिया के प्रतीक रूप में मीमांसा शास्त्र द्वारा यज्ञादि कर्म का वर्णन किया गया है।

वैशेषिक-के लिए कहा गया, वह कालरूप कारण का वर्णन करता है। प्रत्येक कार्य के होने में काल अवश्य कारण रहता है इस शास्त्र के व्याख्याकारों ने कहा है-'जन्यानां जनकः कालो जगतामाश्रयो मतः।' समस्त उत्पन्न होने वाले पदार्थों का काल कारण होता है। इसी मान्यता को स्वीकार करते हुए महाभारत आदि में कहा गया है।

कालः सृजति भूतानि कालः संहरते प्रजाः।

वस्तुमात्र की उत्पत्ति और संहार आदि में सर्वत्र काल की कारणता निर्बाध स्वीकार की जाती है। इस आधार पर श्वेताश्वतर उपनिषद् की प्रारम्भिक दूसरी कण्डिका में विश्व के कारणों का विवरण

देने की भावना से उपनिषद्कार 'काल' का सर्व प्रथम उल्लेख किया है। इस मान्यता का मूल आधार वैशेषिक का यह सूत्र है-

नित्येष्वभावादनित्येषु भावात् कारणे कालारख्येति।
[2/2/9]

देर, जल्दी, एक साथ, पर, ऊपर, छोटा, बड़ा आदि व्यवहार नित्य पदार्थों में नहीं होता, अनित्यों में होता है, इससे सिद्ध है- कार्यमात्र के कारण रूप में 'काल' का नाम लिया जाता है। यह विवरण वैशेषिक दर्शन प्रस्तुत करता है।

न्याय शास्त्र-के विषय में कहा गया-वह उपादान कारण का दर्शन करता है। विचारणीय हैं-न्यायदर्शन में जिस प्रकार तत्त्वों का निरूपण किया गया है, उसका उल्लेख दर्शन के प्रथम सूत्र में है; पर वहां परमाणु या किसी मूल कारण तत्त्व का नाम तक नहीं। सत्यार्थ प्रकाश में यह बात न्याय-दर्शन के किस विवरण के आधार पर लिखी गई है, यह ऋषि के गम्भीर अध्ययन एवं तत्त्वविवेचन के सूक्ष्मेक्षण को अभिव्यक्त करता है। शरीरादि-उत्पत्ति के प्रसंगवश चौथे अध्याय के प्रथम आह्निक में इसका स्पष्ट विवरण उपलब्ध होता है। वहां तीन सूत्र [11 से 13] द्रष्टव्य है।

उनका संक्षिप्त सार केवल इतना है, कि परम सूक्ष्म पृथिव्यादि परमाणुओं से स्थूल पृथिव्यादि तथा देहादि की उत्पत्ति होती है। वे परमाणु अतीन्द्रिय होते हुए भी व्यक्त हैं। व्यक्त जगत् अपने समानजातीय व्यक्त परमाणुओं से उत्पन्न हो सकता है। परमाणु से जगदुत्पत्ति का इतना स्पष्ट निर्देश अन्य किसी दर्शन में नहीं है। यद्यपि यह तथ्य ऋषि की दृष्टि से ओझल नहीं था कि न्यायदर्शन का मुख्य प्रतिपाद्य विषय जगत् के उपादान कारण का विवरण प्रस्तुत करना नहीं है; यह बात तृतीय समुल्लास के इस प्रसंग के प्रश्न का उत्तर देते हुए ऋषि ने लिखी है। वहां का लेख है-

''प्रथम तो बिना सांख्य और वेदान्त के दूसरे चार शास्त्रों में सृष्टि की उत्पत्ति प्रसिद्ध नहीं लिखी।''

इसका स्पष्ट तात्पर्य यही है, कि सृष्टि की उत्पत्ति के मुख्य कारण उपादान और निमित्त का केवल दो शास्त्रों में वर्णन किया गया है, सांख्य और वेदान्त में। सांख्य में उपादान कारण का विस्तृत विवरण है, तथा वेदान्त में निमित्त कारण का। जगत् का उपादान कारण प्रकृति और निमित्त कारण ब्रह्म है। शेष चार शास्त्रों में इन्हीं के अंगभूत तत्त्वों का विवेचन हुआ है; इसलिए इन सब में विरोध की आशंका सर्वथा निर्मूल है।

यह स्पष्ट है-ऋषि ने परमाणु को अनित्य माना है और उसे अव्यक्त नित्य प्रकृति से उत्पन्न हुआ बताया है। अष्ठम समुल्लास के इस प्रसंग में ऋषि ने संस्कृत-सन्दर्भ इस प्रकार लिखा है-

''नित्यायाः सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्थायाः प्रकृतेसत्यन्नानां परमसूक्ष्माणां पृथक् पृथग्वर्त्तमानानां तत्त्व परमाणूनां प्रथमः संयोगारम्भः संयोगविशेषाद-वस्थान्त रस्य स्थूलाकार प्राप्तिः सृष्टिरुच्यते।''

यह संस्कृत सन्दर्भ ऋषि का अपना लिखा प्रतीत होता है। परन्तु इसका मूल योगदर्शन [1/44 सूत्र] के व्यासभाष्य की वाचस्पति मिश्रकृत टीका-तत्त्ववैशादी में उपलब्ध है।

ऋषि ने इन्हीं आधारों पर उपादान कारण के रूप में परमाणु के साथ प्रकृति का प्रायः सर्वत्र प्रथम निर्देश किया है। तात्पर्य यह है कार्यमात्र समस्त विश्व का मूल उपादान कारण प्रकृति है; तथा स्थूल जगत् की उत्पत्ति से पूर्व का कारण पृथिव्यादि परमाणु हैं। इसी कारण उक्त सन्दर्भ के अन्त में 'संयोगविशेषाद-वस्थान्तरस्य स्थूलाकार प्राप्तिः' पद दिए गए हैं।

इस प्रकार उक्त पंक्तियों द्वारा यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि न्याय में उपादान कारण के विवरण की वास्तविकता क्या है और उसके रहते शास्त्र के अविरोध एवं समन्वय का स्वरूप क्या हो सकता है।

योग-में ''पुरुषार्थ एवं विद्या, ज्ञान, विचार न किया जाये, तो नहीं बन सकता।'' मानव द्वारा की गई प्रत्येक रचना में उक्त सभी बातों की आवश्यकता रहती है। इसी के अनुरूप सर्ग रचना में इनका अनुमान किया जाता है। योगशास्त्र आत्मज्ञान अथवा तत्त्वसाक्षात्कार एवं आत्माऽनात्मविवेक की प्रयोगात्मक पद्धति का विवरण प्रस्तुत करता है। अभ्यास अथवा प्रयोग के लिये आचरण में आने वाले विनिय अंगों का एक विशेष अनुक्रम रहता है। यदि उसी प्रकार अभ्यास या प्रयोग किया जाता है, तो सिद्धि रचना की सफलता सम्भावित रहती है। प्रयोगात्मक पद्धति की इसी विशेषता का निर्देशन योगशास्त्र करता है, जो रचनामात्र में अपेक्षित है। इसका विरोध किसी के साथ सम्भव नहीं, न इसकी उपेक्षा की कहीं संभावना है। सर्ग रचना के इसी अंश का अभिव्यञ्जन योगशास्त्र करता।

सांख्य-में ''तत्वों का मेल न होने से नहीं बन सकता।'' 'तत्वों का मेल' इन पदों से केवल संयोग मात्र अपेक्षित नहीं है। कार्य मात्र के मूलभूत तत्व सत्त्व, रजस् तमस् का परस्पर एक दूसरे में मिथुनीभूत हो जाना 'मेल' का तात्पर्य है। इन गुणों को ऐसा मेल तत्त्वों की एक भिन्न अवस्था को अभिव्यक्त करने में समर्थ होता है। परस्पर नितान्त विजातीय इन गुणों (प्रकृति रूप मूल तत्त्वों) के मिथुनीभूत होने के प्रकार की कोई सीमा नहीं है, इसी कारण ये गुण मिथुनीभाव की प्रक्रिया से अनन्त प्रकारों में परिणत हो जाते हैं, जिसे विश्व के रूप में क्रान्तदर्शी मानव देखने का प्रयास करता रहता है। सत्त्व रजस्तमो रूप मूल प्रकृति के विविध परिणामों की प्रक्रिया का विवरण सांख्यदर्शन प्रस्तुत करता है। इस प्रकार वास्तविक तथ्य के रूप में विश्व का उपादान

कारण त्रिगुणात्मक प्रकृति है। ऋषि ने इसी मान्यता को आदर दिया है, जैसा कि इसी लेख में प्रथम निर्देश किया गया है।

वेदान्त-में 'बनाने वाला न बनावे तो कोई भी पदार्थ उत्पन्न न हो सके।' यह अत्यन्त स्पष्ट एवं निर्विवाद तथ्य है, कि वेदान्त दर्शन जगत्स्रष्टा ब्रह्म का सर्वांग पूर्ण विवरण प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार छहों दर्शन सृष्टि रचना सम्बन्धी अपेक्षित विविध साधनांगों का निरूपण करते हैं, जो एक-दूसरे के पूरक हैं।

यदि ऋषि के द्वारा सुझाये गये दार्शनिक समन्वय के इस सिद्धान्त को गम्भीरता एवं उदारतापूर्वक लिया जाये, तो तथाकथित नास्तिक दर्शनों के साथ भी समन्वय के मार्ग में कोई भारी अनिवार्य रुकावट दिखाई नहीं देती। तब ऐसा प्रतीत होता है, कि विभिन्न आचार्यों ने अपने काल में तत्त्व जिज्ञासा की पूर्ति के लिए जिस अंश व अंग का तात्कालिक अभ्युदय एवं अन्य सामाजिक सुविधाओं व अनुकूलताओं के लिए अधिक उपयोगी समझा, उसका सुझाव दिया, जिसकी कालान्त में स्वार्थी अखाड़ेबाजों ने अपनी संकुचित सिद्धि के लिये साधन बना डाला, मूल आचार्य का सद्भावना पूर्ण लक्ष्य सर्वथा तिरोहित कर दिया गया। आइये, इस पर विचार करें।

चार्वाक-दर्शन चेतन-अचेतन रूप में तत्त्वों का विवेचन प्रस्तुत करता है। चार्वाक दर्शन की इस मान्यता को जब विचार-कोटि में लाया जाता है, कि इस समस्त चर-अचर एवं जड़-चेतन जगत् का मूल आधार तत्त्व केवल जड़ है, तब उसका तात्पर्य केवल इतने अर्थ के प्रतिपादन में समझना चाहिए, कि इस लोक में मानव मात्र की सुख-सुविधा-और सब प्रकार के अभ्युदय-के लिए सर्वप्रथम तथाकथित जड़तत्त्व की यथार्थता और उसकी प्राणि-कल्याणकारी उपयोगिता को जानना परम आवश्यक है। उसकी उपेक्षा कर संसार में हमारा सुखी रहना सम्भव न होगा।

चार्वाक दर्शन के सामने जब यह जिज्ञासा की जाती है कि क्या जड़ तत्त्व से अतिरिक्त चेतन तत्त्व का नित्य अस्तित्व नहीं माना जाना चाहिए? तब समाधान रूप में चार्वाक दर्शन का यही कहना है, कि चेतन के अस्तित्व से उसे कोई इन्कार नहीं है, पर वह नित्य है, या कैसा है, कहां से आता है, कहां जाता है? संसार को बनाने वाला कौन है? इत्यादि विचार-मन्थन उस समय तक अनपेक्षित है, जब तक उन तत्त्वों की यथार्थता व उपयोगिता को नहीं जान लिया जाता, जिन पर हमारा वर्तमान अस्तित्व निर्भर हैं। मरने के बाद क्या होगा? इसकी अपेक्षा यह अधिक आवश्यक है, कि हम जीवित कैसे रह सकते हैं।

जैनबौद्धदर्शन-ये दर्शन जड़ तत्त्व से अतिरिक्त चेतन तत्त्व के स्वतन्त्र अस्तित्व का उपदेश करते हैं। जैनदर्शन चेतन (आत्म) तत्त्व को जहां संकोच विकासशील बताता है दूसरा उसे ज्ञानस्वरूप मानकर क्षणिक कहता है, और उसके निर्विकार भाव को अक्षुण्ण बनाये रखना चाहता है। बौद्ध-दर्शन में विभिन्न अधिकारी-स्तर की भावना से ज्ञान-रूप (अथवा विज्ञान रूप) चेतनतत्त्व का विवेचन उस स्थिति तक पहुंचा दिया गया है, जहां यह प्रतिपादन किया जाता है, कि समस्त चराचर जड़-चेतन जगत् उस विज्ञान' का ही आभास है। बाह्य का स्वतन्त्र अस्तित्व कुछ नहीं। ये सब तत्त्व विचार के विभिन्न स्तर हैं। फलत: चेतन-अचेतन के विभिन्न प्रकार के विवेचन में परस्पर विरोध की न होकर जिज्ञासु अधिकारी के कल्याण की भावना अधिक है।

इस प्रसंग में वस्तुभूत तथ्य यह ज्ञात होता है, कि तथाकथित नास्तिक दर्शन के मूल प्रवक्ताओं ने ईश्वर-अथवा ऐसी परमशक्ति, जो समस्त विश्व का नियन्त्रण करती है उसके अस्तित्व का निषेध नहीं किया। उन्होंने किन्हीं विशेष परिस्थितियों से बाधित होकर वैसा प्रवचन किया। वे परिस्थितियां चाहे जिज्ञासु जनों की योग्यता पर आधारित रही हों, प्रतीत होता है-उस-उस काल के लोक कर्त्ता व्यक्तियों ने ईश्वर या तत्सम्बन्धी मान्यताओं को अवाञ्छनीय सामाजिक संघर्ष का अनवेक्षित कारण समझकर लोगों को सुझाया हो, कि अरे भाई! इन अदृश्य अज्ञेय तत्त्वों को थोड़े समय के लिए एक ओर रहने दो, अपने वर्तमान जीवन को सुधारो, सबके कल्याण के लिए, सदाचार पर ध्यान दो, परस्पर सहानुभूति से रहना सीखो, उससे हमारा यह लोक सुखमय होगा, और परलोक भी। ऐसे आचरणों से ईश्वर तक भी पहुंचा जा सकता है। उन्होंने समाज के सदाचार पर अधिक बल दिया। इसकी तब अपेक्षा रही होगी। वस्तुत: इसकी अपेक्षा सदा रहती है। उन प्रवक्ताओं का तात्पर्य ईश्वर के अस्तित्व तथा वेदों की मान्यता के नकार में नहीं समझना चाहिए तब ऐसे विरोध की भावना इन दर्शनों के मूल में कहां रह जाती है?

आदि प्रवक्ताओं के जन कल्याणकारी लक्ष्य विभिन्न विचारों की इन काली-पीली आंधियों में तिरोहित हो चुके हैं। तत्त्व की खोज में यही भावना जिज्ञासु को सचाई के अन्तिम लक्ष्य तक पहुंचा सकती है, कि सृष्टि के इस अनवरत प्रवाह में वे सब विचार अपने स्थान व अपने स्तर पर ठीक हैं, सत्य से अधिचारित हैं। उनमें छिपे यथार्थ को उभार लाने के लिए आज तक जो सफल प्रयास किये गये हैं, उनसे दार्शनिक तत्त्वों के यथार्थ स्वरूप को समझने में पूरा सहयोग प्राप्त हुआ है।

इस लघुकाय लेख में, प्रकट किये विचार दिग्दर्शनमात्र हैं। आर्य विद्वान् इस पर गम्भीर विचार कर उपयुक्त सुझाव देंगे, तो बड़ा कार्य होगा।

शिवरात्रि पर्व और ऋषिबोधोत्सव

ले.-प्रा. श्री भद्रसेन (होशियारपुर) 146021

पर्व शब्द का अर्थ है-मेल और इसका अभिप्राय है-संगठन प्रसन्नता। भारतीय पर्वों में महाशिवरात्रि का एक धार्मिक पर्व के रूप में एक विशेष गौरवपूर्ण स्थान है, आर्य समाज की दृष्टि से शिवरात्रि जहां धार्मिक पर्व है, वहां ऐतिहासिक पर्व भी है। इसीलिए ही इस पर्व को ऋषिबोधोत्सव के नाम से भी स्मरण किया जाता है। क्योंकि-

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन से परिचित पाठक जानते हैं, कि बालक मूलशंकर का 13 वर्ष तक का जीवन दूसरे बच्चों की तरह ही बीता और 14वें वर्ष मूल के पिता जी ने कहा-'बेटा! कल शिवरात्रि का पर्व है, अतः आज कथा सुनने के लिए जायेंगे। बालक मूल नई चीज की खुशी में पिता जी के साथ कथा सुनने के लिए गया। वहां बड़ी उत्सुकता, श्रद्धा से कथा को सुना, जिस में कथावाचक ने बड़े विस्तार से शिव देवता की वीरता की घटनायें सुनाई और ऐसे शिव के व्रत रखने की पद्धति और महिमा बताई। यह सब सुनकर घर लौटते हुए मूल ने पिता जी से कहा-इस बार मैं भी शिवरात्रि का व्रत रखूंगा।

एक धार्मिक पिता के लिए इससे अधिक बड़ी खुशी की बात और क्या हो सकती है कि उसका पुत्र स्वयं कहे, कि मैं अपने धर्म की मर्यादा के अनुसार यह व्रत रखूंगा। अतः पिता जी ने बालक को व्रत रखने के लिए प्रोत्साहित किया। परन्तु जब मूल की माता को इस बात का पता लगा, तो उस ममतामयी मां ने व्रत के नियमों की कठिनता को अनुभव करते हुए ऐसी प्रतिज्ञा न करने की बात कही, पर मूलशंकर अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहा। पद्धति के अनुरूप बालक मूल ने सारा दिन निराहार व्रत बड़ी श्रद्धा से रखा और सायंकाल बड़ी निष्ठा के साथ पिता जी के साथ रात्रि जागरण के लिए टंकारा के शिव मन्दिर में गया। वहां पूजा, कीर्तन के साथ रात्रि जागरण प्रारम्भ हुआ।

कुछ समय पश्चात् कई भक्त घर चले गए और कई वहीं पर पीछे हट कर सो गए। मूल शिव के दर्शनों की उत्सुकता में जब जागने का जबरदस्ती प्रयास कर रहा था, तब उसने चूहों को शिव पर अर्पित मिठाई, फल खाते हुए देखा। आश्चर्य से भर कर मूल ने पिता जी को जगाकर पूछा, शिव जी इन को हटाते क्यों नहीं? इस प्रकार मूल ने प्रश्न पर प्रश्न किए। पिता जी ने मूल के प्रश्नों का उत्तर देते हुए प्रसंगवश कहा-सच्चे शिव तो कैलाश में रहते हैं। प्रश्नों के उत्तरों से सन्तुष्ट न होने पर मूल ने पिता जी से घर जाने की आज्ञा ली और अपने मन में सच्चे शिव के दर्शनों की प्रतिज्ञा करते हुए वह घर लौट गया।

इस घटना चक्र से मूलशंकर के मन में एक ऊहा-पोह, उपजा और विचार स्वातन्त्र्य, सच्चाई को समझने, कार्य-कारणभाव को जानने की ज्योति जगमगाई। इसके पश्चात मूल से शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी और फिर दयानन्द संन्यासी बनकर सच्चे गुरु की खोज की और ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द दण्डी से सम्पर्क किया तथा गुरु की आज्ञा के अनुसार आर्षज्ञान की ज्योति प्रकाशित करते हुए महर्षि दयानन्द ने जीवन के सच्चे शिव को स्पष्ट, सुनिश्चित करने का प्रयास किया। वस्तुत यही ऋषि का वह बोध है, था, जिस का उत्सव आर्य समाज इस पर्व पर अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए आयोजित करता है।

1838 की शिवरात न केवल मूलशंकर के लिए कल्याण की रात बनी, अपितु मूल से बने महर्षि दयानन्द द्वारा करोड़ों के कल्याण का कारण सिद्ध हुई। शिव तथा शिव के जितने भी पर्यायवाची शब्द। शम्भु, शंकर, मयस्कर, मयोभव मृड आदि हैं, उन सबका अर्थ कल्याण, सुख ही है। सारा भारतीय साहित्य-धर्म को ही सुख का आधार, मूलस्त्रोत मानता है और इसी आधार पर महर्षि ने अपनी रचनाओं में अनेक बार धर्म को ही सुख, कल्याण का सर्वस्व सिद्ध किया है। जैसे कि-'धर्मजन्य सुखरूप फल-जो विद्या पढ़ के धर्माचरण करता है, वही सम्पूर्ण सुख को प्राप्त होता है (सत्यार्थ प्रकाश 3,52), निश्चय जानों कि वह अधर्माचरण धीरे-धीरे तुम्हारे सुख के मूल को काटता चला जाता है (सत्यार्थ 4,95), धर्म का फल सुख-सत्यार्थ 4,97 और इसी भावना से महर्षि ने यह मूलमन्तव्य निर्दिष्ट किया है, कि 'सब काम धर्मानुसार-(आर्य समाज नियम-5) अर्थात् हमारे जीवन के हर क्षेत्र का प्रत्येक कार्य धर्म के ही अनुसार हो। अतः इस शिव=कल्याण के महान पर्व पर कल्याणकारक धर्म के रूप को जानना, समझना, अपनाना प्रथम बात हो जाती है।'

वस्तुतः शिव का रहस्य, मर्म या मार्ग धर्म का आचरण ही है। धर्म शब्द धृ धातु से मनिन प्रत्यय होने से बनता है। जिसका

अर्थ है-धारण अर्थात् जिसके धारण, पालन से सुख प्राप्त हो। जो धर्म का फल स्वर्ग, जन्नत मानते हैं, उनकी दृष्टि में स्वर्ग की कल्पना सुख रूप ही है। धर्म का ईश्वर भक्ति एक प्रमुख तत्त्व है, और ईश्वर-आनन्द, सुख, कल्याण का खजाना है। हां, परमात्मा का मुख्य स्वरूप कर्म फल देना ही है। शेष सारे गुण इसी के अन्दर आ जाते हैं। अत: अच्छा फल प्राप्त करने के लिए अच्छे कर्म-धर्म का आचरण ही एक मात्र सुख का आधार है। महर्षि ने इसी दृष्टि से जहां ईश्वर भक्ति का वर्णन किया है, वहां धर्म को बताने के कारण ही वेद को इतना अधिक महत्त्व दिया है। सारा भारतीय साहित्य इस का साक्षी है और तभी तो यह कहा जाता है, कि 'धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुति: (2, 13)=जो धर्म को समझना चाहते हैं, वे वेद द्वारा ही धर्म का निश्चय करें 'क्योंकि धर्म अधर्म का निश्चय बिना वेद के ठीक-ठीक नहीं होता (सत्यार्थ 3, 52)।'

मीमांसा दर्शन, मनुस्मृति आदि शास्त्र धर्म की पहचान हित के रूप में ही बताते हैं। तभी तो सन्त तुलसीदास जी ने लिखा है- 'परहित सरस धर्म नहीं भाई' और शिव का अर्थ भी कल्याण ही है, अत: इस शुभ पर्व पर कल्याण के आधार धर्म को समझना बहुत जरूरी हो जाता है, क्योंकि भारतीय शास्त्रों और हमारे व्यवहार में धर्म शब्द अनेक अर्थों में आता है, अत: उसके सही रूप और प्रसंग को समझने के लिए यह जानना बहुत जरूरी है, कहां किस का वाचक है? तभी तो मनुस्मृति में कहा है-'आचार: परमो धर्म: 1,108 अर्थात् आचरण सबसे बड़ा धर्म है और अन्य धर्म के अर्थ, रूप=धर्मग्रन्थ, स्थान, विश्वास, जप, तप, तीर्थ, यज्ञ, पूजापाठ, सत्संग आदि सड़क के वोर्डों की तरह रास्ता दिखाने वाले हैं, हृदय शुद्धि के लिए हैं।

जैसे कि धर्म= अच्छाई, भलाई ही है, इस पर पक्का रहने के लिए ही हम धर्मग्रन्थ पढ़ते हैं, सत्संग करते हैं। इसीलिए मनु जी ने धृति, क्षमा, संयम, सच्चाई आदि दश बातों को धर्म कहा है। जो कि आचरण, अच्छाई की ही बातें हैं। इनको पालने से ही जीवन, परिवार, समाज सुखी होता है। धर्म के जितने भी अर्थ मिलते हैं, उनका असली आधार, मूल जड़-आचार=आचरण, अच्छाई, भलाई ही है। इस मूल बात को न समझने के कारण अर्थात् जड़ को न सींचने के कारण आज धर्म के नाम पर ताण्डव नाच हो रहा है, जिस से परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, विनाश ही सामने आ रहा है। हम जड़ को सींचने के स्थान पर पत्तों को पानी दे रहे हैं, फिर भी अच्छे फलों की आशा करते हैं।

यह मानी हुई बात है, कि कृषि या बागवानी में अच्छे फल या हरा-भरापन तभी प्राप्त होता है, जब मूल सजीव होता है, जड़ को सींचा जाता है। इसी स्थिति में ही फसल या पौधे, वृक्ष का विकास होता है। इसीलिए उपनिषद के ऋषि ने सन्देश दिया है, कि 'सन्मूला: सोम्येभा: सर्वा: प्रजा: छान्दोग्य 6,8,4 क्योंकि मूल के सजीव होने पर ही शाखा, शाखा, पत्ते, फूल, फल पनपते हैं। पत्तों को पानी देने से फल हरा-भरापन, प्रगति नहीं आती। ठीक इसी प्रकार आर्यो! शिवरात्रि को मानने वालो! आओ सोचें, कि हम अपने जीवन, परिवार, समाज में जिस प्रगति, सफलता, हरे-भरेपन को चाहते हैं, क्या उसी की जड़ को सींच रहे हैं, या उसके पत्तों को पानी दे रहे हैं? जैसे कि-धर्म का मूल-आचार=अच्छाई है और धर्म के नाम से पुकारे जाने वाले पूजा-पाठ, जप, तप, तीर्थ, ग्रन्थ, स्थल, स्नान, पत्ते हैं, पर जहां कहीं देखो।

आज सर्वत्र पत्तों को प्रमुखता दी जा रही है। इसीलिए पत्तों को पानी देने से धर्म का फल सुख, स्नेह, सद्भाव सामने लाने वाले आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं रूपी मूलों, जड़ों को सींचने के स्थान पर जो कभी भूलकर आर्य समाज में एक दिन आ जाते हैं, हम केवल उन्हीं का स्वागत, सत्कार, अभिनन्दन करते हैं, जबकि आर्य समाज का कार्य प्रतिदिन करने वाले उपेक्षित रहते हैं।'

आर्य समाज (के प्रसार) का मूल स्थानीय आर्य समाजें हैं और आर्य समाज के प्रचार की जड़ आर्य समाज के सत्संग हैं, क्योंकि उनमें ही हम अपने सदस्यों के विचारों, भावनाओं को सुदृढ़ करते हैं। अत: वार्षिक उत्सवों, विशेष समारोहों की तरह उन की ओर ध्यान देना चाहिए। उन पर भी विशेष व्यय करना चाहिए, उन सत्संगों में योग्य विद्वानों को उत्सव की तरह बुलाया जाए। उस समय अपने सदस्यों से आने वाले का परिचय हो, अपने सदस्यों की शंकाओं, जिज्ञासाओं, विचारों पर विचार हो। इससे वे सदस्य आर्य समाज से अपनापन अनुभव कर सकेंगे और सदस्य आर्य समाज के सुदृढ़ स्तम्भ सिद्ध होंगे। तब वे आर्य समाज की जड़ बन कर विकास में सहयोगी हो सकेंगे।

आर्य समाज का इतिहास इस बात का साक्षी है, कि जब तक आर्य समाज के सत्संग सोत्साह, होते रहे, तभी तक आर्य समाज पनपता रहा। अत: आर्य समाज की शिवरात्रि=कल्याण की घड़ी की मांग है, कि हम अपनी स्थानीय आर्यसमाजों, छोटे समझे जाने वाले कार्य कर्त्ताओं, सदस्यों पर विशेष ध्यान दें। ये आर्य समाज की प्रगति की जड़ हैं, जिन 'जड़ों को सींचने से' आर्य समाज हरा-भरा हो सकता है।

''हम भी शिव बने: कैसे?''

ले.-पूर्व प्रिंसीपल विमला श्रीवास्तव, भिलाई

शिव रात्रि पर्व से प्रेरणा प्राप्त कर आइये हम भी शिव बनें परन्तु कैसे? इसका उपाय निम्नलिखित है:-

शिव का अर्थ है कल्याणकारी। 'शिव' ईश्वर का पर्यायवाची शब्द भी है क्योंकि संसार का सबसे अधिक कल्याणकारी यदि कोई है तो वह है इस संसार का रचयिता, पालन पोषण कर्त्ता, रक्षाकर्त्ता, संहारकर्त्ता, सर्वशक्तिमान व सर्वव्यापक परमात्मा। इस कारण वेदों में उस परम शक्ति को 'शिव', 'शंकर' आदि नामों से सम्बोधित किया गया है। ईश्वर को 'शिव' नाम से सम्बोधित करते हुए नमस्कार मंत्र उदाहरणीय है:-

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च,

नमः शंकराय च, मयस्कराय च,

नमः शिवाय च, शिवतराय च।

कल्याणकारी परमात्मा का शिव रूप सर्वत्र दृष्टि गोचर होता है। अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी व आकाश ये पांच तत्व जिनसे सृष्टि का निर्माण हुआ है, हर समय प्राणीमात्र का निरन्तर कल्याण कर रहे हैं।

सूर्य अग्नि का ही रूप है जिससे सदैव हमें प्रकाश, चेतना व प्रेरणा शक्ति प्राप्त होती है। पृथ्वी मां की भांति अपने मधुर फल-फूलों व रोगनिवारक औषधियों द्वारा निरन्तर प्रेमभाव से हमारा पालन-पोषण करती है। वायु हमें केवल प्राण ही प्रदान नहीं करती अपितु हमें प्यार से चूमती हुई मां की तरह लोरी दे देकर आनन्दित भी करती है। जल हमें निरन्तर प्राण प्रदान करके शीतलता व तृप्ति प्रदान करता है। आकाश के द्वारा शिव रूप परमात्मा हमें वाणि देकर परस्पर वार्तालाप, व संगीत का आनन्द प्रदान करता है।

सारांश यह है कि यदि ये पांच तत्व न होते तो हम कभी भी सुखी व आनन्दित नहीं हो सकते थे परन्तु हमारा दुर्भाग्य है कि हमने ईश्वर की इस महान् देन को कभी महत्व नहीं दिया और न ही उसके प्रति हम कभी कृतज्ञता प्रकट करते हैं। भक्त कवि गुरु नानक देव जी ने सत्य ही कहा है-

दात पियारी, बिसरिया दातार

कोई न जाने जनम मरण विचार।

अर्थात् दाता ने जो कुछ हमें दिया है उसकी देन तो हमें अत्यन्त प्रिय हो गई परन्तु उसे देने वाले दाता को हम भूल गये। किसी को अपने जन्म व मरण का भेद ही मालूम नहीं।

हमारे भारतीय चित्रकारों व मूर्तिकारों ने परमात्मा के इस शिव रूप को शिव के चित्र व मूर्ति के रूप में जितनी सुन्दरता के साथ चित्रित किया है वैसा चित्रांकन विश्व का कोई चित्रकार या मूर्ति-कार आज तक नहीं कर सका।

भारत में ईश्वर के शिव रूप की वैदिक काल से स्तुति वन्दना चली आ रही है, वह इसके साक्षी हैं शिव की प्रतिमा या उसके चित्र उस ईश्वर के कल्याणकारी गुणों के प्रतीक हैं जो हमें शिव को पाने के लिए तथा कल्याणकारी बनने की मधुर शिक्षा व प्रेरणा प्रदान करते हैं।

शिव की प्राप्ति पवित्र मन द्वारा आलस्य त्याग कर, साधना, करने से ही सम्भव हो सकती है परन्तु दुर्भाग्य से हम लोग धीरे-धीरे इस सत्य साधना को भूल गये और केवल शिव की मूर्तिपूजा बनकर रह गये। मूर्ति से प्रेरणा लेने के स्थान पर हम केवल यंत्रवत अर्घ्यादि चढ़ाने व तिलक लगाकर चरणामृत पीने में ही अपनी पूजा की इति श्री समझ बैठे। इस यंत्रवत पूजा विधान से एक दिन सच्चे शिव के अनुरागी मूलशंकर जी जब सच्चे शिव के दर्शन नहीं कर सके तो उनकी अतृप्त आत्मा विद्रोह कर उठी और अपने पिता, पितामह द्वारा मनायी जाने वाली 24 फरवरी 1838 की 'शिवरात्रि' उनके लिए 'बोध दिवस' बन गई। अन्ततोगत्वा मूलशंकर जी सच्चे शिव की खोज करने के लिए घर से निकल पड़े और अपनी भक्ति साधना व तपश्चर्या द्वारा उन्होंने एक दिन सच्चे शिव को खोज निकाला तथा उस कल्याणकारी ईश्वर के गुणों को धारण करके वह स्वयं शिव रूप हो गए। यदि हम भी चाहें तो हम भी शिव जी के चित्र को ध्यान में रखकर उसमें दर्शाये गये कल्याणकारक गुणों को अपने जीवन में धारण करके शिव बन सकते हैं। उदाहरणतया-

शिव जी के चित्र में बाघ के चर्मासन पर उन को समाधि में

लीन दिखाया गया है जिनकी जटा से गंगा प्रवाहित हो रही है। साथ ही दूज का चांद दिखाया गया है। माथे पर दो नेत्रों के बीच में तीसरा नेत्र है। गले में सांप लटके हैं। कण्ठ विष पीने के कारण नीला दिखाया गया है। शरीर पर भभूत रमायी हुई है। पास में त्रिशूल, डमरू व नन्दी बैल है। इन सब चिन्हों के द्वारा चित्रकार ने बहुत गम्भीर अर्थ को चित्रित किया है जो निम्नलिखित है-

1. सिर से बहने वाली गंगा का अर्थ है, गंगा की तरह शीतल व पुनीत विचारधारा अर्थात् काम, क्रोधादि विकारों से रहित शांत, पवित्र व उज्जवल विचारधारा।

2. दूज का चन्द्रमा-उत्तरोत्तर बढ़ने वाले, लोक रंजक शीतल ज्ञान रूपी प्रकाश का प्रतीक है।

3. तीसरा नेत्र-इससे तात्पर्य है अलौकिक ज्ञान जिसके द्वारा शिव जी ने कामदेव को भस्म कर दिया।

4. शरीर पर भभूत-इसका अर्थ है शरीर नाशवान है। प्राण निकल जाने के बाद यह शरीर राख हो जायेगा अत: इससे मोह करना उचित नहीं।

5. बाघ चर्मासन-इससे अभिप्राय है काम वासना बाघ की तरह शक्तिशाली होती है इस पर विजय प्राप्त करनी चाहिए।

6. डमरू-यह क्रांति, शांति, शक्ति व प्रेरणा का प्रतीक है।

7. त्रिशूल-अर्थात् त्रि (तीन) + शूल। त्रिशूल तीन प्रकार के शूलों अर्थात् शारीरिक, मानसिक व प्राकृतिक कष्टों का प्रतीक है। वेदमंत्र द्वारा शांतिपाठ में हम तीन बार शांति, शांति, शांति का उच्चारण करते हैं इसके द्वारा हम प्रार्थना करते हैं कि हे परमात्मा हमारे इन तीन प्रकार के शूलों को दूर करें।

8. नन्दी बैल-यह कृषि का साधन तथा समृद्धि का प्रतीक है।

9. गले में सर्प माला-यह लोगों के कष्टों को गले लगाने या दूर करने का प्रतीक है।

10. नीलकण्ठ-यह समाज सेवा करते हुए कष्टों को पीने की ओर संकेत करता है।

तात्पर्य यह है कि शिव जी के चित्र में चित्रित शिव के उपरोक्त गुणों को धारण करने से हम भी शिव बन सकते हैं।

1. शिव बनने के लिए हम सबसे पहले काम, क्रोध लोभ आदि विकारों पर विजय प्राप्त करके अहिंसक बनने का अभियान आरम्भ करें।

क्रोध को शांत करने का एक ही उपाय है वह है हम अपने को शक्तिमान, न्यायकारी व दयालु न मानकर ईश्वर को ही सर्वशक्तिमान, न्यायकारी व दयालु मानकर चलें। इससे हमारा अहंकार, नष्ट होगा और हमारे सिर से शीतल व पवित्र विचारों की गंगा प्रवाहित होने लगेगी। बिना शीतल व शुद्ध विचारों के हम दूसरों का कल्याण तो दूर रहा अपना कल्याण भी नहीं कर सकते।

2. हम दूज के चन्द्रमा की भांति निरंतर अपने ज्ञान के प्रकाश को बढ़ाने के लिये स्वाध्याय करें।

3. हम अपने शरीर को नाशवान समझकर समाज के कष्टों रूपी सांपों को गले से लगाकर चले अर्थात् उनके कष्टों को दूर करने का प्रयत्न करें।

4. बाघ के चर्मासन पर बैठ कर अर्थात् संयमी होकर ईश्वर का ध्यान व चिंतन करें। ईश्वर भक्ति से ही हम कल्याणकारी कार्य कर सकते हैं।

5. समाज सेवा के कार्यों में मिलने वाले कष्टों या अपमान रूपी विष को पी जायें परन्तु उन्हें अपने गले तक ही रखें। उन्हें गले से नीचे उतार कर हृदय को न छूने दें। यदि यह विष एक बार गले से उतर कर हमारे हृदय तक पहुंच गया तो हममें क्रोध उत्पन्न हो जायेगा। तब हम समाज का कल्याण नहीं कर पायेंगे।

6. हानिकारक रूढ़ियों को समय-समय पर डमरू बजाकर अर्थात् क्रांतिकारी विचारों द्वारा दूर करते रहें।

7. समाज के तीन प्रकार के शूलों को अपने तन, मन, धन रूपी त्रिशूल द्वारा दूर करने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहें तथा असमर्थ रोगी व गरीब प्राणियों की सेवा करें उन्हें सुख पहुंचाने का प्रयत्न करें।

8. हम अपने भौतिक नेत्रों के साथ-साथ ज्ञान के तीसरे नेत्र का भी प्रयोग करें। तदर्थ हम वेद अध्ययन आत्मचिंतन व महान व्यक्तियों के जीवन से अपने ज्ञान की निरन्तर वृद्धि करें ताकि जब भी कोई शत्रु हमारी ईश्वर भक्ति व समाज के कल्याणकारी कार्यों के बीच में बाधक हो तो उसे हम ज्ञान द्वारा नष्ट कर सकें।

सारांश यह है कि शिव जी का चित्र शिवम् (कल्याणकारी) गुणों का चित्र है। इन गुणों को धारण करके समाज का कल्याण करते हुए हम भी शिव बन सकते हैं। इसके लिए स्वाध्याय, संकल्प, सेवा व साधना परम आवश्यक है।

॥ ओ३म् ॥

नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

सारे संसार का कल्याण करने वाले उस परमपिता परमात्मा को बार-बार नमस्कार।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

दोआबा आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, नवांशहर

(स्थापित-1911)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) गुरुदत्त भवन,
किशनपुरा चौक, जालन्धर द्वारा संचालित
अपने गौरवमय इतिहास को पुनर्जीवित
करने के लिये दृढ़ संकल्पिक
निरन्तर प्रगति की
ओर अग्रसर

विशेष आकर्षण

सुन्दर, विशाल भवन, भव्य पुस्तकालय, अत्याधुनिक कम्प्यूटर शिक्षा, शानदार परीक्षा परिणाम, अनुभवी तथा योग्य अध्यापक, नैतिक, सांस्कृतिक व धार्मिक शिक्षा, विशाल क्रीड़ा क्षेत्र, खेलों की आधुनिक प्रयोगशालाएं, समस्त भव्य सुविधाओं से परिपूर्ण

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये तुरन्त सम्पर्क करें।

जिया लाल शर्मा	ललित मोहन पाठक	कुलवन्त राय	राजेन्द्र सिंह गिल
प्रधान	उप प्रधान	प्रबन्धक	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् इन्द्रायेन्द्रो परिस्त्रव।

ऋग्वेद 7,113,7

मेरा मन ज्योतिर्मान प्रभु की ओर प्रवाहित हो तथा परमानन्द की प्राप्ति करें।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोधदिवस के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज नवांशहर दोआबा

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. उच्च स्तर की पढ़ाई।

2. मेहनती व अनुभवी स्टाफ।

3. शिक्षा के क्षेत्र में उच्च स्थान।

4. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।

5. शिक्षा में देशभक्ति व सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश।

❖❖❖

नये सत्र में अपनी लड़कियों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें नैतिक शिक्षा व उच्च शिक्षा को प्राप्त कराने के लिये सम्पर्क करें।

देशबन्धु भल्ला	सुरेन्द्र मोहन तेजपाल	विनोद भारद्वाज	तरणप्रीत कौर
प्रधान	उप प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म्॥

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापति।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा॥ (यजुर्वेद 32/5)

हे सर्वोत्कृष्टेश्वर! आप आनन्दस्वरूप और आनन्ददाता हैं, विज्ञानमय और विज्ञानप्रद हैं, सब संसार के अधिष्ठाता और पालन ऐश्वर्य दाता हैं, परमपवित्र और अनन्त बलवान हैं, सब के धारण पोषण करने वाले हैं, कृपा करके हम को ऐसी बुद्धि दें कि जिससे हम सर्वविद्या सम्पन्न हों, यह हमारी बारम्बार प्रार्थना है।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर.के. आर्य कालेज नवांशहर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

शिवरात्रि के शुभ अवसर पर, प्रबन्धकर्तृ सभा के सदस्य, प्राध्यापकगण, प्रिंसीपल और विद्यार्थी सभी आर्य बन्धुओं व बहिनों को हार्दिक बधाई भेंट करते हैं।

☆☆☆☆

नवांशहर के क्षेत्र में उच्च शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र। खेलों का समुचित प्रबन्ध व खुले मैदान, धार्मिक, नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान, चरित्र निर्माण पर विशेष बल।

☆☆☆☆

नये सत्र में अपने बच्चों के सर्वतोमुखी विकास के लिये, उनके चरित्र निर्माण के लिये, धार्मिक व नैतिक शिक्षा के लिये और उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें ***आर.के. आर्य कालेज नवांशहर*** में प्रवेश करवायें।

विनोद भारद्वाज	सोहन सिंह	एस.के.बरूटा	डा.संजीव डाबर
प्रधान	उप प्रधान	सैक्रेटरी	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

नाप्राप्यमभिवांछन्ति नष्टं नेच्छन्ति शोचितुम्।
आपत्सु च न मुहयन्ति नराः पण्डित बुद्धय्॥

जो मनुष्य प्राप्त होने के अयोग्य पदार्थों की कभी इच्छा नहीं करते अदृश्य व किसी पदार्थ के नष्ट भ्रष्ट हो जाने पर शोक करने की अभिलाषा नहीं करते और बड़े-बड़े दु:खों से मुक्त व्यवहारों की प्राप्ति में भी मूढ़ होकर नहीं घबराते, वे मनुष्य पंडितों की बुद्धि से युक्त कहाते हैं। (व्यवहारभानु)

– महर्षि दयानन्द

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डब्ल्यू.एल. आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल नवांशहर

☆☆☆

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

☆☆☆

1. *अनुभवी तथा उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।*
2. *नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा पर विशेष बल।*
3. *अच्छे परीक्षा परिणाम, सुन्दर भवन, हवादार कमरे।*
4. *आधुनिक विशेषताओं से युक्त पाठ्यक्रम में देश भक्ति व सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश।*

नये सत्र में अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य और आदर्श शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

ललित मोहन पाठक	ललित शर्मा	जिया लाल शर्मा	आरती कालिया
प्रधान	उपप्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ओ३म् ॥

न वा उदेवाः क्षुधमिद् वधं ददुः, उताशितमुपगच्छन्ति मृत्यवः।
उतो रयिः पृणतो नोपदस्यति, उतापृणन् मर्डितारं न विदन्ते॥ (ऋ. 10/117/1/11)

देवों ने न केवल भूख दी भूख के रूप में मौत दी है, अपितु खाते पीते अमीर को भी नाना प्रकार से मौत आती है और देने वाले की धन-सम्पत्ति क्षीण कभी नहीं होती अपितु जो दान न देने वाला है, वह कभी भी किसी सुख को प्राप्त नहीं करता अपितु दान देने वाला सुख को प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व शिवरात्रि पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डा. आसानन्द आर्य माडल सी.सै.स्कूल नवांशहर

विशेषताएं

☆☆☆

1. *शिशुशाला से +2 तक नियमित कक्षाएं और सुयोग्य एवं प्रशिक्षित स्टाफ।*
2. *धार्मिक शिक्षा।*
3. *कम्प्यूटर शिक्षा।*
4. *हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम से पाठ्यक्रम का पठन-पाठन।*
5. *विशाल क्रीडा क्षेत्र।*
6. *सुन्दर भवन।*
7. *हरे-भरे वृक्ष।*
8. *उचित जल एवं विद्युत व्यवस्था।*
9. *हवादार कमरे आदि विशेषताओं से सम्पन्न है।*

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की छत्रछाया में उन्नति के पथ पर अग्रसर

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र सरीन	**ललित कुमार शर्मा**	**अंचला भल्ला**	**अमित सभ्रवाल**
प्रधान	प्रबन्धक	डायरैक्टर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

तंमीडत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृंजसानम्

ऊर्जः पुत्रं भरतं सुप्रदातुं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम ॥ (ऋ. 1/7/3/3)

जो परमात्मा सब जगत् का आदिकारण, वेदविहित कर्मों से प्राप्त होने योग्य, सबका अधिष्ठाता तथा पूजनीय है और जिसको विद्वान लोग प्रकाश तथा नम्रता का देने वाला, जगत् का दुःख हर्ता, धारण पोषणकर्त्ता, ज्ञान तथा क्रिया शक्ति आदि उत्तम पदार्थों का देने वाला मानते हैं, उसी की सब को स्तुति करनी चाहिये, अन्य की नहीं। (आर्याभिविनय)

महर्षि दयानन्द

◆◆◆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

◆◆◆

हार्दिक शुभकामनाएं

◆◆◆

डी.ए.एन कालेज आफ एजुकेशन फार वूमैन, नवांशहर

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

विशिष्टताएं

सुयोग्य प्राचार्य व प्राध्यापकगण, बृहद पुस्तकालय, सांस्कृतिक गतिविधियां, नैतिक व धार्मिक शिक्षा पर बल, कम्प्यूटर और होस्टल सुविधाएं उपलब्ध व समस्त आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण। नये सत्र के लिये अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

◆◆◆

डा.सी.एम.भंडारी	डा. मीनाक्षी शर्मा	गुरविन्द्र कौर
प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

राष्ट्र च रोह द्रविणं व चरोह (अथर्व. 13/1/34)

सुख के लिये राज्य और धन को बढाओ।

★★★

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य कालेज लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. शहर के मध्य में स्थित।
2. अनुभवी व उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
3. हवादार कमरे, खेलने के लिये खुला मैदान।
4. लड़के, लड़कियों के लिये पढ़ाई की अलग अलग व्यवस्था।
5. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
7. सभी तरह की विशेषताओं से युक्त पुस्तकालय व प्रयोगशाला।

नये सत्र में अपने बच्चों का उज्जवल भविष्य बनाने के लिये इस कालेज में प्रवेश करवायें।

सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

सतीशा शर्मा
सैक्रेटरी

सविता उप्पल
प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

यञ्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।

दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं, तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥20॥

भावार्थ– हे प्रभो! तेरा दिव्य शक्ति वाला जो मन जागते हुये का व सोते हुये का दूर दूर तक जाता है अर्थात् चिन्तन करता है, जो सभी ज्ञान–साधक इन्द्रियों का प्रधान ज्योति प्रकाशक है, वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारों वाला होवे।

★★★

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. समृद्ध स्वामी दयानन्द पुस्तकालय।
2. अनुभवी, लग्नशील, मेहनती, सुयोग्य, ट्रेंड स्टाफ
3. स्कूल में पानी की उत्तम व्यवस्था के लिये प्रबन्ध।
4. अच्छे परीक्षा परिणाम तथा गत वर्ष की अपेक्षा विद्यालय में छात्रों की संख्या में वृद्धि।
5. प्रति वर्ष विद्यार्थियों की भलाई व कल्याण के लिये एजुकेशनल टूर ले जाने का निर्णय।
6. आर्थिक अनियमितताओं को दूर करने के लिये प्रयासरत
7. प्राइमरी विंग के बच्चों के लिये खेलने की विशेष सुविधा।
8. खेलों के क्षेत्र में प्रथम आने वाले विद्यार्थियों के प्रोत्साहन के विशेष प्रबन्ध।
9. विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार के लिये स्कूल में धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

अरुण थापर	श्रीमती राजेश शर्मा	राजेन्द्र कुमार
प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

वेद शास्त्रों को पढ़ने वाला व्यक्ति निर्धन भी अच्छा है परन्तु शास्त्र के अध्ययन से रहित और आचरणहीन मनुष्य धनवान भी अच्छा नहीं। सुन्दर नेत्रों वाला फटे पुराने कपड़ों में भी सुन्दर लगता है परन्तु नेत्रहीन सोने के गहनों से सजा हुआ भी शोभित नहीं होता है।

★★★

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य गर्ल्ज सीनियर सै.स्कूल

पुराना बाजार, नजदीक दरेसी मैदान, लुधियाना

विद्यालय के विशेष आकर्षण

1. अंग्रेजी व हिन्दी मीडियम में शिक्षा।
2. उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग।
3. बढ़िया बोर्ड परीक्षा परिणाम।
4. खुले व हवादार कमरे।
5. सांस्कृतिक गतिविधियां।
6. समृद्ध पुस्तकालय
7. गरीब एवं योग्य छात्राओं को छात्रवृत्तियां व वर्दियों का प्रबन्ध।
8. कॉमर्स एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण का विशेष प्रबन्ध।
9. स्कूल में स्वच्छ जल के लिये फिल्टर्ज की व्यवस्था।
10. जरूरतमंद छात्राओं के लिये वर्दियों और स्वैटरस वितरण।
11. प्रतिवर्ष बच्चों की भलाई और कल्याण के लिये एजुकेशनल टूर ले जाने का प्रबन्ध।

नये सत्र में अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य व सर्वांगीण विकास के लिये सम्पर्क करें।

विजय सरीन प्रधान

वजीर चंद उप प्रधान

रणवीर शर्मा प्रबन्धक

ज्योति किरण शर्मा कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु, शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिशाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवा शं नो अप्याः ॥

भावार्थ- हे प्रभो! आपकी कृपा से दिव्य गुण कर्म स्वभाव वाले साधारण जन, विविध प्रकार के देने वाले दाता जन एवं द्युलोक, पृथिवी लोक और अंतरिक्ष लोक से सम्बन्ध दैवी शक्तियां हमारे लिये कल्याणकारी हों।

★★★

महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

दयानन्द पब्लिक स्कूल

दीपक सिनेमा रोड, लुधियाना

(पंजाब शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त)

प्री-नर्सरी से दसवीं कक्षा तक इंग्लिश/ हिन्दी मीडियम, पंजाब पढ़ाने का उत्तम प्रबन्ध

विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
2. आर्ट्स,क्राफ्ट एवं कम्प्यूटर का समुचित प्रबन्ध।
3. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
4. शीतल पेय जल के लिये वाटर कूलर का प्रबन्ध।
5. विशाल एवं हवादार कमरे।
6. शहर के मध्य में स्थित।
7. बढ़िया फर्नीचर।
8. खुला मैदान।
9. शानदार परीक्षा परिणाम।

नये सत्र में प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

अरुण सूद	**मुनीष मदान**	**निर्मल कान्ता**
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

विद्या:- जिससे ईश्वर से लेके पृथिवी पर्यन्त पदार्थों का सत्य-विज्ञान होकर उनसे यथायोग्य उपकार लेना होता है, इसका नाम 'विद्या' है। (महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व

के शुभावसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से सम्बन्धित क्षेत्र की एक मात्र अग्रणी नारी शिक्षण संस्था

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला

यू.जी.सी. एक्ट 1956 के सेक्शन 2 (F) & 12 (B) से सम्बद्ध

नैक (NAAC) द्वारा ग्रेड "B" सी.जी.पी.ए. 2.61 से प्रत्यापित संस्था

में एल.बी.एस. कॉलजिएट सी.सै.स्कूल के अधीन बरनाला +1, +2 एवं महाविद्यालय में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर विभिन्न कक्षाओं, विषयों व कोर्सों के शिक्षण की सुचारू व्यवस्था।

स्नातक शिक्षण कक्षाएं व कोर्स

बी.ए. :- हिन्दी साहित्य, पंजाबी, पंजाबी साहित्य, अंग्रेजी, अंग्रेजी साहित्य, संस्कृत, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, इतिहास, लोक प्रशासन, कम्प्यूटर साईंस, फाईन आर्ट्स, गणित, साइकॉलॉजी, संगीत (कंठ्य), होम साईंस, फिजीकल एजुकेशन, फैशन डिजाइनिंग

- ❒ बी.कॉम
- ❒ बी.एस.सी. (मैडीकल/ नॉन मैडीकल)
- ❒ बी.सी.ए.
- ❒ बी.बी.ए.

यू.जी.सी. प्रदत्त बी.वॉक कोर्स:

- ❒ साफ्टवेयर डेवलेपमेंट
- ❒ फैशन डिजाइनिंग

स्नातकोत्तर शिक्षण कक्षाएं व कोर्स:

- ❒ एम.ए.पंजाबी
- ❒ एम.ए. इतिहास
- ❒ एम.एस.सी. (आई.टी.)
- ❒ एम.एस.सी. (एफ.टी.)
- ❒ पी.जी.डी.सी.ए.

विशेषताएं:-

- ❒ वातानुकूलित विशाल पुस्तकालय
- ❒ बहुद्देश्यीय विशाल सभागार एवं इन्डोर स्पोर्ट्स हॉल।
- ❒ सुविधा सम्पन्न छात्रावास।
- ❒ वाई फाई प्रांगण।
- ❒ सी.सी.टी.वी. कैमरों से लैस प्रांग्रण।
- ❒ उच्च तकनीकी युक्त वातानुकूलित कम्प्यूटर प्रयोगशाला।
- ❒ आधुनिक साधन सम्पन्न विज्ञान प्रयोगशालाएं
  - ❒ भौतिक विज्ञान
  - ❒ रसायन विज्ञान
  - ❒ जीव विज्ञान
- ❒ स्वच्छ व स्तरीय कैंटीन व मैस
- ❒ जैनरेटरों व वाटर कूलरों (आर.ओ.) की व्यवस्था
- ❒ विभागीय कक्ष
- ❒ गांवों से छात्राओं को लाने ले जाने हेतु बसों का उचित प्रबन्ध।
- ❒ एन.सी.सी.,एन.एस.एस.,यूथक्लब, रैड रिब्बन का सुचारू प्रबन्ध

शैक्षिक एवं शिक्षेत्तर उपलब्धियों के लिये पंजाबी विश्वविद्यालय में अपनी विशेष पहचान रखने वाली संस्था

भावी पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

डा.सूर्यकांत शोरी	भारत भूषण मैनन एडवोकेट	केवल जिन्दल	डा.नीलम शर्मा
प्रधान	महासचिव	उपप्रधान	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व के

पावन पर्व पर

☆☆☆

गांधी आर्य सी.सै.स्कूल बरनाला

☆☆☆

की ओर से सभी को

हार्दिक शुभ कामनाएं।

स्कूल की मुख्य विशेषताएं :-

- सभी कक्षाओं के शत–प्रतिशत परिणाम।
- उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग।
- खुले तथा हवादार कमरे।
- वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
- अन्य सह–क्रियाओं में छात्रों का रचनात्मक सहयोग।
- अनिवार्य कम्प्यूटर शिक्षा।
- खेलों का उचित प्रबन्ध।
- बिजली पानी का उचित प्रबन्ध। नये सत्र में बच्चों के दाखिला के लिये सम्पर्क करें।

भारत भूषण मैनन एडवोकेट
प्रधान

संजीव शोरी
मैनेजर

भारत मोदी
सचिव

रामकुमार सोवती
डायरैक्टर

श्रीमती सुमन
प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

मुक्ति के साधनः- अर्थात् ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का करना तथा धर्म का आचरण, पुण्य का करना, सत्संग, तीर्थ सेवन, विश्वास, सत्पुरुषों का संग, परोपकारादि सब अच्छे कामों का करना और सब दुष्ट कर्मों से अलग रहना है, ये सब 'मुक्ति के साधन' कहाते हैं। महर्षि दयानन्द

दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर, बरनाला

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर हार्दिक बधाई

❑ निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❑

- **आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर के मार्ग दर्शन में बरनाला जिले में अग्रणी शिक्षा संस्था।**
- **समय पालन, सामाजिक सहयोग, देश प्रेम, पारस्परिक सद्भाव तथा विश्वास, उत्तरदायित्व की भावना, अनुशासन तथा धर्म और संस्कृति के प्रति आदर का पाठ्यक्रम में समावेश।**
- **कम्प्यूटर शिक्षा, संगीत शिक्षा, क्रीड़ा प्रतियोगिताएं, शैक्षणिक भ्रमण, समृद्ध प्रयोगशाला, समृद्ध पुस्तकालय, खुले हवादार कमरे, वाटर कूलर, जैनरेटर तथा प्राथमिक सहायता की सुविधा।**

☆☆☆

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

☆☆☆

भारत भूषण मैनन
प्रधान

भारत मोदी
मैनेजर

संजीव शोरी
सैक्रेटरी

वन्दना गोयल
कार्यकारी प्रिंसीपल

अनीता मित्तल
डायरैक्टर

॥ ओ३म् ॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं, शृंणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतं, अदीनाः स्याम शरदः शतं,भूयश्च शरदः शतात् ॥9॥

भावार्थः हे प्रभो आप सबके मार्ग दर्शक हैं, विद्वानों के परम हितकारक हैं, आप तेजोमयी शक्ति हैं- हम सौ वर्ष तक आपको ज्ञान चक्षुओं से देखते रहें, सौ वर्ष तक आपके उपदेश को सुनते रहें, और दूसरों को सुनाते रहें, सौ वर्ष तक तथा इससे भी अधिक समय तक आपकी कृपा से हम स्वस्थ जीवन बिताएं और जन्म जन्मांतर तक आपका यश देखते सुनते रहें।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के शुभावसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा

बालिकाओं का उज्जवल भविष्य बनाने वाली एक श्रेष्ठ संस्था

इसके मुख्य आकर्षण हैं:-

1. नगर के मध्य में स्थित
2. खुले हवादार कमरे।
3. कक्षा प्रथम (पहली) से +2 (आर्टस व कॉमर्स) तथा मैडीकल, नॉन मैडीकल तक शिक्षा में प्रति वर्ष शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
4. बच्चों को नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय शिक्षा देकर दृढ़ चरित्र-निर्माण व देशभक्त बनाने का प्रयास।
5. जरूरतमंद बच्चों के लिये पुस्तक व कोष व अन्य तरीकों से आर्थिक सहायता।
6. अनुशासन पर विशेष ध्यान।
7. विभिन्न उपायों से बच्चों के सर्वांगीण विकास पर सतत जोर देना।
8. आधुनिक लैब, साईंस ग्रुप +1, +2 के लिये उपलब्ध।

इस प्रकार अनुभवी प्रबन्धक समिति, सुयोग्य प्रधानाचार्य व प्रशिक्षित स्टाफ के समुचित नेतृत्व व मार्ग दर्शन में दिन-प्रतिदिन उन्नति के सोपानों को पार करता हुआ यह विद्यालय आपके बच्चों का स्वर्णिम भविष्य निर्मित करने के लिये नगरवासियों की सेवा में प्रस्तुत।

"नये सत्र में अपनी कन्याओं को प्रवेश दिलाएं, उन्हें योग्य, चरित्रवान व देशभक्त बनाएं।"

अनिल कुमार	सुरेन्द्र गर्ग	निहाल चंद एडवोकेट	सुषमा कुमारी
प्रधान	उप प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

सत्पुरुष: सत्यप्रिय,धर्मात्मा, विद्वान, सब के हितकारी और महाशय होते हैं, वे 'सत्पुरुष' कहाते हैं।

(महर्षि दयानन्द)

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व ऋषि बोध उत्सव के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य माडल सी.सै.स्कूल, बठिंडा

विशेषताएं:

Ph.No.0164-2238328

1.नगर के मध्य स्थित।

2.योग्य, सुशिक्षित तथा अनुभवी स्टाफ।

3.विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष ध्यान।

4.शानदार परीक्षा परिणाम

5.नगर में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

6.प्रदूषण व ध्वनि रहित जेनरेटर, आर.ओ.पानी, आदि की मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

☆☆☆

अश्विनी कुमार मोंगा
प्रधान

गौरी शंकर
वरिष्ठ उप प्रधान

श्रीमती ऊषा गोयल
उप प्रधान

सुरेन्द्र गर्ग
सचिव

विपिन कुमार गर्ग
प्रधानाचार्य

॥ ओ३म् ॥

जीव का रहस्यः- जो चेतन, अल्पज्ञ, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुख और ज्ञान-गुण वाला तथा नित्य है, वह 'जीव' कहाता है।

(महर्षि दयानन्द)

ऋषि जन्म दिवस व बोध दिवस के पर्व पर सभी आर्य बन्धुओं और बहनों को स्कूल की प्रबन्धक समिति, प्रधानाचार्या एवं समस्त अध्यापकगण की ओर से

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य संस्कृति की गरिमा को समर्पित संस्था

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल एवं वैदिक कन्या पाठशाला

औहरी चौक, बटाला

संस्था के विशेष आकर्षण

1. छात्राओं के सर्वांगीण विकास का जाना-माना शिक्षा संस्थान।
2. धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का प्रबन्ध।
3. योग्य उच्चतम शिक्षा प्राप्त निष्ठावान तथा अनुभवी अध्यापक।
4. कम्प्यूटर लैब का उचित प्रबन्ध।
5. पुस्तकालय की सुविधा।
6. साफ-सुथरे उच्चस्तरीय कमरे।
7. गर्ल्ज गाईड तथा बैंड व्यवस्था।
8. सांस्कृतिक आधार।
9. बिजली के पंखे तथा शीतल पेयजल का प्रबन्ध।
10. शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
11. नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

निरन्तर प्रगति की ओर नारी उत्थान में संलग्न संस्था

प्रविन्द्र चौधरी	**अशोक कुमार अग्रवाल**	**विजय अग्रवाल**	**नीरू शैली**
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

पुरुषार्थ:–अर्थात् सर्वथा आलस्य छोड़ के उत्तम व्यवहारों की सिद्धि के लिये मन, शरीर,वाणी और धन से जो जो अत्यन्त उद्योग करना है, उसनको 'पुरुषार्थ' कहते हैं। (महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

श्रीराम आर्य सी.सै.स्कूल पटियाला

(Affiliated to P.S.E.B)

प्रमुख विशेषताएं

1. शत प्रतिशत बोर्ड परिणाम।
2. सुयोग्य और अनुभवी स्टाफ।
3. शिक्षा का आधुनिक ढंग।
4. हिन्दी, अंग्रेजी व पंजाबी माध्यम।
5. उच्च शिक्षा, कम शुल्क।
6. प्राकृतिक वातावरण।
7. खुले व हवादार कमरे।
8. बड़ा खेल का मैदान।
9. नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा पर विशेष ध्यान।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

डा. वीरेन्द्र कौशिक
प्रधान

अश्विनी मेहता
मैनेजर

चन्द्रमोहन कौशल
प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

अविद्या:- जो विद्या से विपरीत है, भ्रम, अंधकार और अज्ञानरूप है, इसलिये इसको 'अविद्या' कहते हैं।

(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व शिवरात्रि पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल पटियाला

❒ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❒

संस्था के विशेष आकर्षण

1. पंजाब सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त।
2. नगर के मध्य में स्थित
3. 10+2 तक की शिक्षा (आट्र्स व कामर्स ग्रुप) तदर्थ नये भवन के ब्लाक का विशेष प्रबन्ध।
4. पुस्तकालय, प्रयोगशाला एवं हवादार कमरों वाली इमारत।
5. बिजली,पानी आदि की मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।
6. राष्ट्र प्रेम, धर्म व संस्कृति का आदर, भाइचारे की भावनाओं का विकास कर भारतीयता पर आधारित चरित्र निर्माण पर विशेष बल
7. आर्य समाज के दस नियम, गायत्री मंत्र, नैतिक व धार्मिक शिक्षा की परीक्षाओं की विशेष व्यवस्था।
8. कम्प्यूटर, संगीत व गृह-विज्ञान की शिक्षा का विशेष प्रबन्ध।
9. स्कूल के अति उत्तम शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
10. रैडक्रास, होम नर्सिंग, गर्ल गाईड की शिक्षा देकर विद्यार्थियों में सहायता का भाव उत्पन्न करना।
11. प्रधानाचार्य अनुभवी प्रतिभावान, सुशिक्षित व नगर में प्रतिष्ठित सुचारू प्रबन्ध कमेटी के योग्य निर्देशन में

अपने उच्च शिक्षित पूर्णतया योग्य अनुभवी स्टाफ के साथ मिल कर सफलतापूर्वक पाठशाला का संचालन कर रही है।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

सोमप्रकाश — प्रधान

शैलेन्द्र मेहरा — प्रबन्धक

किरण जिन्दल — प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

परिमाग्ने दुश्चरितादवाध्स्व मा सुचरिते भज।

यजु. 4/28

हे प्रकाशमय प्रभो ! मुझे दुराचार से रोको और सच्चरित्र में प्रेरो

***

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व के शुभ अवसर पर

***

हार्दिक शुभकामनाएं

***

आर्य कन्या सी.सै.स्कूल, बस्ती नौ, जालन्धर

***

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ

निरन्तर उन्नति कीओर अग्रसर

विशेषताएं

विशाल भवन, हवादार कमरे, उच्च शिक्षित व
शिक्षा को समर्पित स्टाफ, कन्याओं के
विकास के लिये निरन्तरकार्यरत,
नैतिक शिक्षा पर
विशेष बल।

***

नए सत्र में अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य
और आदर्श व उच्च शिक्षा के लिये
सम्पर्क करें।

ज्योति शर्मा
प्रधान

सुधीर शर्मा
प्रबन्धक

मीसूनूजा
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् अस्माकमिन्द्रः स्मृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्तु जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माकं उ देवा अवता हवेषु॥

(साम. अध्याय 22, खंड 4, मंत्र 2)

भावार्थः वीरों के बल से विजयी हम, फहरावें जय कीर्ति ललाम। देव हमारे धरती तल पर, प्राण पसारे जय वरदान। अमर शहीदों के पथ पर चल कर शान्ति का करें, प्रसार, शक्ति हमें दो भगवन ऐसी, वेद धर्म का हो विस्तार।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां, जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. विशाल भवन।
2. खेल के मैदान।
3. हवादार कमरे।
4. शिक्षा को समर्पित अध्यापक वृन्द।
5. अहर्निश छात्र वर्ग के विकास के लिये कार्यरत।

अपने लड़के व लड़कियों को धार्मिक शिक्षा दिलवाने के लिये
शिक्षा शास्त्री बनाने के लिये, सर्वांगीण विकास के लिये
तथा उनका उज्जवल भविष्य बनाने के लिये
आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, बस्ती गुजां
जालन्धर में प्रथम श्रेणी से 10+2
तक की पढ़ाई के लिये
प्रवेश करवाएं।

सरदारी लाल आर्य
प्रधान

विशाल पुरुथी
मैनेजर

श्रीमती सारिका
प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

पंडितः- जो सत् असत् को विवेक से जानने वाला धर्मात्मा, सत्यप्रिय, विद्वान और सब का हितकारी है उसको पंडित कहते हैं।

-महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोधपर्व के पावन अवसर पर

***

हार्दिक शुभकामनाएं

***

डी.एन.माडल सी.सै.स्कूल मोगा

❑ विशेषताएं ❑

1. प्रशिक्षित एवं अनुभवी स्टाफ।
2. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
3. कम्प्यूटर कक्षाओं, पुस्तकालय एवं समृद्ध प्रयोगशालाओं का उत्तम प्रबन्ध।
4. गत वर्ष की उज्जवल उपलब्धियों, शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।

उच्च स्तरीय शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियों और राष्ट्रीय निर्माण में क्षेत्र की सर्वश्रेष्ठ संस्था।

सी.बी.एस.ई. दिल्ली द्वारा

मान्यता प्राप्त

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

कृष्ण गोपाल एडवोकेट
उप प्रधान

रितू गक्खड़
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।

यद्भद्रं तन्न आसुव॥ (यजु. 30/3)

(सवित) हे संसार के उत्पन्न करने वाले, संसार पर शासन करने वाले, संसार को शुभ प्रेरणा देने वाले, (देव) दिव्यगुणयुक्त परमेश्वर! (विश्वानि) सब (दुरितानि) बुराईयां को, दुरवस्थाआं को (परा+सुव) दूर कीजिए। (यत्भद्रम्) जो भद्र [है] (तत् नः) वह हमें (आसुव) दीजिए।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध उत्सव के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.एम कालेज मोगा

❒ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❒

संस्था के विशेष आकर्षण

1. प्रशिक्षित एवं अनुभवी व मेहनती स्टाफ।
2. पढ़ने के लिये नव सुविधाओं से युक्त कमरे।
3. गत वर्षों की उज्जवल उपलब्धियां शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।
4. मोगा के क्षेत्र में प्रतिष्ठता प्राप्त कालेज।
5. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष बल।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान।
7. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाएं।

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

कृष्ण गोपाल एडवोकेट
उप प्रधान

डा. एस.के. शर्मा
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।४।।

भावार्थ: तुम्हारे संकल्प और प्रयत्न मिल कर हों, तुम्हारे हृदय परस्पर मिले हुये हों। तुम्हारे अन्तःकरण मिले रहें। जिसमें परस्पर सहायता से तुम्हारी भरपूर उन्नति हो।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध उत्सव के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य माडल सी.सै. स्कूल-मोगा

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य, चरित्र निर्माण और सर्वतोमुखी विकास के लिये सेवा का अवसर दें।

❒ विशेष आकर्षण ❒

1. सुसज्जित भवन, खुले हवादार कमरे।
2. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
3. हाई पावर विद्युत जनरेटर, शुद्ध एवं शीतल पेयजल।
4. आधुनिक कम्प्यूटर प्रयोगशाला, स्मार्ट कक्षाएं व यंत्रों से लैस साईंस व गणित प्रयोगशाला।
5. सी.सी.टी.वी. कैमरों का विद्यालय में उचित प्रबन्ध।
6. उच्च स्तर की सफाई व बढ़िया अनुशासन।
7. नैतिक शिक्षा व धार्मिक शिक्षा पर बल।
8. की कक्षाओं का आरम्भ शीघ्र।
9. खेलों का उचित प्रबन्ध।
10. आवश्यक पाठ्य सामग्री युक्त पुस्तकालय।
11. वैदिक शिक्षा व साप्ताहिक हवन यज्ञ।
12. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

सत्यप्रकाश उप्पल	नरेन्द्र सूद	समीक्षा शर्मा
प्रधान	मैनेजर	प्राचार्य

॥ ओ३म् ॥

देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पति वाचं नः स्वदतु ॥ (यजु. 30/3)

हे परमात्मा! सबको सत्कर्म करने और सत्कर्मों का संरक्षण करने की बुद्धि दो। अपने उत्तम ज्ञान से पवित्र करने वाले ज्ञानी से हम सब ज्ञान को पवित्र करें। उत्तम वक्ता द्वारा हम सब वाणी को मधुर बनाएं, जिससे हम सबकी उन्नति हो

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध उत्सव के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डी.एम कालेज आफ एजुकेशन

❐ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❐

संस्था के विशेष आकर्षण

1.प्रशिक्षित एवं अनुभवी व मेहनती स्टाफ।

2. पढ़ने के लिये नव सुविधाओं से युक्त कमरे।

3. गत वर्षों की उज्जवल उपलब्धियां शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।

4. मोगा के क्षेत्र में प्रतिष्ठता प्राप्त कालेज।

5. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष बल।

6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान।

7. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाएं।

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

कृष्ण गोपाल एडवोकेट
उपप्रधान

एम.एल.जैदका
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म्॥

शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त संकिर।

सैंकड़ों हाथों से कमाओ और हजारों हाथों से शुभ कार्यों में खर्च करो।

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध उत्सव के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य कालेज फार वूमैन खरड़

1. कम्प्यूटर शिक्षा का विशेष प्रबन्ध।
2. कढ़ाई सिलाई का विशेष प्रबन्ध।
3. फूल बनाना, खिलौने बनाने की विशेष शिक्षा।
4. शत–प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
5. अनुभवी तथा मेहनती स्टाफ।

❖❖❖

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

❖❖❖

अपनी लड़कियों के उज्जवल भविष्य के लिये, उन्हें नैतिक शिक्षा व उच्च शिक्षा को प्राप्त कराने के लिये सम्पर्क करें।

❖❖❖

अजय अग्रवाल — प्रधान

अशोक शर्मा — सैक्रेटरी

राजविन्द्र कौर — प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।४।।

भावार्थः तुम्हारे संकल्प और प्रयत्न मिल कर हों, तुम्हारे हृदय परस्पर मिले हुये हों। तुम्हारे अन्तःकरण मिले रहें। जिसमें परस्पर सहायता से तुम्हारी भरपूर उन्नति हो।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध उत्सव के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य समाज बाजार श्रद्धानंद-अमृतसर

❒ प्रमुख विशेषताएं ❒

1. अमृतसर शहर की अग्रणी शिक्षण संस्था–चार दशकों से समाज की सेवा में
2. आर्य समाज की विचारधारा एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के संदेशों के प्रचार व प्रसार को समर्पित संस्था।
3. विशाल, शानदार, हवादार तीन इमारतें एवं खेल के मैदान की व्यवस्था।।
4. जनरेटर, वाटर कूलर, साफ पानी के लिये आर.ओ. की उत्तम व्यवस्था।
5. नर्सरी से 10+2 (आर्ट्स एवं कामर्स) तक पढ़ाई का समुचित प्रबन्ध।
6. अनुभवी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त सुयोग्य अध्यापकगण।
7. कम्प्यूटर शिक्षा, शारीरिक शिक्षा, योग एवं खेलों पर जोर।
8. औपचारिक शिक्षा के साथ साथ धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
9. लड़कियों एवं गरीब वर्ग के विद्यार्थियों को विशेष सुविधाएं।
10. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं एवं घरेलू परीक्षाओं में शानदार परिणाम

निरन्तर प्रगति की ओर

शशि कोमल प्रधान	**पवन टंडन** उपप्रधान	**पुरुषोत्तम चंद शर्मा** महामंत्री
डा. रविकांत शर्मा कोषाध्यक्ष	**संजय गोस्वामी** मंत्री	**पवन त्रिपाठी** प्रचार मंत्री

॥ ओ३म् ॥

देवत्तं ब्रह्म गायत।

ऋग्वेद 1/37/4

ईश्वर प्रदत्त वेद का सदा गान करो।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध उत्सव के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

❖

एम.डी.ए.एस. सी.सै.स्कूल मोगा

विश्व गुरु स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के पद्चिन्हों पर चल कर अपना मानव जीवन सफल बनायें तथा राष्ट्र को सही दिशा दें।

❖

❒ प्रमुख विशेषताएं ❒

1. योग्य, परिश्रमी और अनुभवी अध्यापक वर्ग।

2. प्रबन्धक समिति के शिक्षित और दूरदर्शी सदस्यों द्वारा पूर्ण सहयोग।

3. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान।

4. खेलों के साथ साथ सह पाठ्यक्रम क्रियाओं के प्रति विशेष ध्यान।

5. शिक्षण विकास की परीक्षा हेतु समयानुसार परीक्षाएं।

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें एम.डी.ए.एस. सी.सै.स्कूल मोगा दाखिल करवाये।

सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा	कृष्ण गोपाल	देवेन्द्र गोयल
प्रधान	*उप प्रधान*	*प्रिंसीपल*

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं आर्य समाज नवांशहर के तत्वावधान में आयोजित 18 फरवरी 2020 को आर.के.आर्य कालेज नवांशहर में पंडित हरबंस लाल शर्मा द्वितीय वैदिक भाषण प्रतियोगिता के अवसर पर ज्योति प्रज्वलित करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्रीमती गुलशन शर्मा जी। उनके साथ खड़े हैं श्री विनोद भारद्वाज, श्रीमती मीना भारद्वाज, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज एवं अन्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं आर्य समाज नवांशहर के तत्वावधान में आयोजित 18 फरवरी 2020 को आर.के.आर्य कालेज नवांशहर में पंडित हरबंस लाल शर्मा द्वितीय वैदिक भाषण प्रतियोगिता के अवसर पर ज्योति प्रज्वलित करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी। उनके साथ खड़े हैं सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, श्रीमती गुलशन शर्मा, श्रीमती मीना भारद्वाज श्री विनोद भारद्वाज, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल एवं अन्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं आर्य समाज नवांशहर के तत्वावधान में आयोजित 18 फरवरी 2020 को आर.के.आर्य कालेज नवांशहर में पंडित हरबंस लाल शर्मा द्वितीय वैदिक भाषण प्रतियोगिता के अवसर पर सभागार में बैठे हुये पदाधिकारी एवं प्रतियोगी।

रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2018-20 **RNI No. 26281/74**

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं आर्य समाज नवांशहर के तत्वावधान में आयोजित 18 फरवरी 2020 को आर.के.आर्य कालेज नवांशहर में पंडित हरबंस लाल शर्मा द्वितीय वैदिक भाषण प्रतियोगिता के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी सम्बोधित करते हुये।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं आर्य समाज नवांशहर के तत्वावधान में आयोजित 18 फरवरी 2020 को आर.के.आर्य कालेज नवांशहर में पंडित हरबंस लाल शर्मा द्वितीय वैदिक भाषण प्रतियोगिता के अवसर पर सामूहिक रूप से आर.के.आर्य कालेज के छात्र भजन गायन करते हुये।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं आर्य समाज नवांशहर के तत्वावधान में आयोजित 18 फरवरी 2020 को आर.के.आर्य कालेज नवांशहर में पंडित हरबंस लाल शर्मा द्वितीय वैदिक भाषण प्रतियोगिता के अवसर पर सामूहिक रूप से कालेज की छात्राएं भजन गायन करती हुईं।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।